महाकवि कालिदास की अमरकृति

मेघदूत

(डोगरी अनुवाद)

श्यामलाल शर्मा

प्रकाशक—
श्रीपतिप्रकाशन, १६५ विजयगढ़ जम्मू

सादर भेंट

भगवत शर्मा

१८.२.६९

महाकवि कालिदास की अमरकृति

मेघदूत

(डोगरी अनुवाद)

श्यामलाल शर्मा

प्रकाशक—

श्रीपतिप्रकाशन, १६५ विजयगढ़ जम्मू

Kalidasa's MEGHA DŪTA
Dogri Translation by
SHYAM LAL SHARMA

● प्रकाशक
श्रीपति शर्मा
श्रीपति प्रकाशन, १६५ विजयगढ़, जम्मू

● मूल्य : दो रुपये

● प्रकाशन तिथि २१ फर्वरी १६६७

● मुद्रक
अमर आर्ट प्रैस
मोती बाज़ार, जम्मू

(कल्चरल एकैडमी जम्मू कश्मीर की आर्थिक सहायता के लिये आभार प्रदर्शन)

शुद्धि पत्र

(पूर्वमेघ)

पृष्ठ	श्लोक	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
८	१६	१	त्वय्यात्तं	त्वय्यायत्तं
९	१७	४	पुनर्यस्थोक्चै:	पुनर्यस्तथोच्चै:
९	१८	३	यास्यत्मर	यास्यत्यमर
१३	२५	४	वेत्रवत्याश्लोर्मि	वेत्रवत्याश्चलोर्मि
१४	२८(अनुवाद)	२	पियां	दियां
१६	३८	४	त्वचि	त्वयि
२०	३६	४	शान्तोद्वेग स्मितनयत्नं	शान्तोद्वेग स्तिमितनयनं
२१	४२	३	प्रालेयास्त्रं	प्रालेयास्त्रं
२७	५३	१	शैलराजावतीर्णा—	शैलराजावतीर्णा
३०	६०	२	संरक्ताभिस्त्रपुर	संरक्ताभिस्त्रिपुर
३१	६२	४	राशि भूत:	राशीभूत:
३३	६६	३	किसलयाम्यंशुकानि	किसलयान्यंशुकानि

(उत्तरमेघ)

पृष्ठ	श्लोक	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
३६	६	३	विशदश्चन्द्रपादै:	विशदैश्चन्द्रपादै:
४६	२३ अनुवाद	४	कमलसी	कमलनी
५०	३०	२	हारैदिवास्त्रै:	हारैरिवास्त्रै:
६६	६३	४	नत्वाऽऽयार्चरण	नत्वाऽऽयार्याश्चरण

—०—

डोगरी दा बोध बकास ते अनुवाद

हर बकास शील भाशा गी अपनियां नमियां तांगां पूरियां करने आस्तै मौलक रचनाएं दे कन्ने दूइयें भाशाएं दे चुने दे ग्रन्थें दा अनुवाद करने दी बी लोड़ पौन्दी ऐ। इनें अनुवादें दे दो टकोदे लाह हुन्दे न।

पहला ए जे इनें अनुवादें राहें बकासशील भाशा थोड़े जतनै कन्नै गै, अपनी साहित्तक सग्गोसारी बदाई लैन्दी ऐ। एदे च कोई शक नेई जे सबने भाशाएं दी अदबी खुशहाली दा मता सारा दारोमदार ओदियें अपनियें मौलक रचनाएं पर गै हुन्दा ऐ, पर अनुवादें राहें बी इस गल्लै च उसी खासी मदद मिलदी ऐ। मठोने आलियें भाशाएं दी शुरू-शुरू दिएं जरूरतें गी पूरा करने आस्तै जे मौलक रचनां नईं जुड़न तां अनुवादें कन्ने गै ओ कमी पूरी कीती जाई सकदी ऐ। इने अनुवादें राहें उस भाशा कोल उच्चियां सरोखड़ रचनां आई जन्दियां न जिन्दे करी भाशा दा मान-मुल्ल बी बददा ऐ ते ओदे नमें साधकें गी ठोस प्रेरणा देने आले साधन बी जुड़ी जन्दे न।

अनुवादें दा दूआ टकोदा लाह ए हुंदा ऐ जे इस चाली उन्नत भाशा दी गेई कन्ने गै मलाइयै चलने दे जतनें करी मठोने आली नमीं भाशा दी साहित्तक समर्थ बददी ऐ। मानु दी सोच, ओदी कल्पना, ओदे भाव बचार जिनें अम्बरें तकर डुआरियां भरदे न, भाशा गी बी उत्थों तगर पुज्जने दी समर्थ अपने अन्दर पैदा करनै पौन्दी ऐ। एदे आस्तै मुगते साधक लोड़चदे न, मुगता समां लोड़चदा ऐ।

अनुवादें राहें नमीं मठोने आली भाशा गी अपनी ए समर्थ बदाने आस्ते खुल्ले मदान ते खुल्ले अम्बर अपने आप थोई जन्दे न। ए ठीक ऐ जे अनुवादें दा मता सारा बड़प्पन अनुवादकें दी योग्यता पर टिकेदा हुन्दा ऐ। अनुवाद करने आले दी पहुँच, ओदी ज्ञान-समर्थ, भाशा दे खिल्लरे दे खजाने तगर उसदी रसाई, जिस भाशा चा अनुवाद करना ऐ ते जिस भाशा च अनुवाद करना ऐ दौनें दे स्वातमै दी

गम्भीर जानकारी उसी जिन्नी जादा होग अनुवाद उन्ना गै मौलक ते जानदार होई सकग।

अनुवाद करने गित्तै ग्रन्थें दी ताल बी बड़ी समझदारी कन्ने करने दी लोड़ हुन्दी ऐ। पहलें ते ए दिक्खना पौन्दा ऐ जे जिस ग्रन्थै गी असें अनुवाद करने आस्तै चुनेआ ऐ स्हाड़ी भाशा दे स्वातम ते स्हाड़ी संस्कृति कन्ने मेल खान्दा ऐ जां नेईं ? अपनी भाशा च ओदा रूपान्तर होई बी सकदा ऐ जां नईं ? होई जाग तां भाशा कन्ने जुड़ी दी साहित्त-साधना गी ओदे थमां किन्ना लाह होगा ?

इस चाली चुने दे ग्रन्थें दे अनुवादें दी सफलता दी परख पड़ताल इस्सै गल्लै परा होग जे कीते दा अनुवाद पढ़ने आलें गी मूल रचना दा भाव- स्वातम, ओदी बौद्धक उंचाई ते ओदे च बरतोई दी कला कल्पना दा रूप नखार, इनें सबनें गल्लें दी झलक बी दस्सी जा ते अपने तौरै पर बी ओ इक बा-मतलब बा-मुहावरापूर्ण रचना सेई होऐ।

डोगरी बी अज्ज इस्सै चाली बदने-मठोने दा जतन करै करदी ऐ। इनें जतनें च उसी अनुवादें दी खासी लोड़ ऐ। अज्ज लोड़ ऐ जे साहित्य दे सबने अंगें च एदे बोध बकासै गी अग्गें बदाने आस्तै दूइयें भाशाएं थमां काव्य-उपन्यास, नाटक, एकांकी निबन्ध, आलोचना, जीवनी, काव्यशास्त्र, इतिहास संस्कृति, विज्ञान सरबन्धी चुनी दिएं पोथिएं दे अनुवाद कीते जान। पर, अजें इस बक्खी बड़े ममूली इक-दो जतन होए न। जेड़े होए बी हैन उन्दी बी कुसै ने साहित्तक परख-पड़ताल नईं कीती। अजें अस अपने आपैगी ऐसी निग्गो सारी च सेई करै करने आं जे हर नमीं रचना गी दिक्खियै खुशी होइयै आखी-पौनेआं चलो इक बादा होर होआ। एदा कारण इयै जे असेंगी थोड़ बड़ी ऐ ते उसी पूरा करने दे जतन बड़े गै जड्डे न।

डोगरी च अनुवाद करने दे इस कम्मै च श्री श्यामलाल शर्मा होरें बड़ा सराहने जोग जोग दित्ता ऐ। एदे थमां पहले ओ डोगरी भाशा च "बताल पचीसी" ते "श्री बाल भागवद्" दे अनुवाद करियै छपाई चुके न। श्री राजगोपालाचार्य दे महाभारत (अंग्रेजी) दा बी उनें डोगरी अनुवाद कीता ऐ। इस खेतरै च ए मेघदूत उन्दा चौथा जतन ऐ। इनें

अनुवादें आस्तै जेड़े ग्रन्थ उनें चुने न ओ सब्बै बड़े लोक-प्रिय न। मेघदूत श्री कालिदास हुन्दी अमर रचना ऐ। श्री श्याम होरें संस्कृत श्लोकें दा अनुवाद डोगरी गद्य च कीता ऐ। एदे कन्ने डोगरी दे नमें साहित्य च इक होर रचना दा बादा होआ ऐ। श्री श्याम हुन्दे ए जतन, मिगी मेद ऐ जे दूए साथियें गी बी प्रेरणा देङन।

कर्ण नगर जम्मू :
२६ जनवरी, १९६७.

रामनाथ शास्त्री

भूमिका

मैंने डोगरी रिसर्च इन्स्टीच्यूट, जम्मू के मन्त्री श्री श्यामलाल शर्मा जी कृत महाकवि कालिदास के मेघदूत काव्य के डोगरी गद्यानुवाद का पारायण किया। शर्मा जी का यह प्रयास अत्यन्त ही श्लाघनीय है। उदीयमान-डोगरी-साहित्य की उत्तम ग्रन्थमाला का यह एक सुन्दर तथा नवीन पुष्प है जिसे पढ़ कर डोगरी भाषा के अनुरागी महाकवि कालिदास की संस्कृत कृति के कविता कानन में विहार एवं उसके दिव्य रस का आस्वादन कर सकें गे। अब जब कि जम्मू-कश्मीर विश्व विद्यालय में डोगरी भाषा की 'तिलक', 'प्रवीण' और 'शिरोमणि' संज्ञक तीन परीक्षाओं के पठन-पाठन का प्रबन्ध हो रहा है तो यह अत्यन्त आवश्यक है कि इन परीक्षाओं के उपयोगी साहित्य का भी साथ साथ सृजन होता चले। हमारे नवयुवक डोगरी साहित्यकार और लेखकों ने इस दिशा में काफी प्रगति की है। मेरे विचार में डोगरी भाषा में आज तक जो पुस्तकें विविध विषयों पर छप चुकी हैं उनकी संखया सौ से ऊपर ही होगी। सन १९४४ से लेकर जब कि डोगरी संस्था जम्मू ने डोगरी के उत्थान और संवर्धन का बीड़ा उठाया, आज तक २२ वर्षों के अन्तर में इसने जिस साहित्य का सृजन किया उस पर किसी भी साहित्यिक संस्था को गौरव हो सकता है। परन्तु डोगरी भाषा में साहित्य के अभाव की पूर्ति के लिये चिर-काल तक डोगरी के अनुरागी सुबोध नव-युवक लेखकों के अनथक परिश्रम की आवश्यकता है। श्री श्यामलाल जी कृत मेघदूत का डोगरी अनुवाद इसी अभाव की पूर्ति की ओर एक महत्वपूर्ण कदम है। इसलिये यह और भी प्रशंसनीय प्रयास है।

मेघ दूत के दो भाग हैं, (१) पूर्वमेघ जिस में ६७ श्लोक और (२) उत्तर मेघ जिस में ६३ श्लोक मन्दाक्रान्त छन्द में रचे गये हैं।

कुल मिला कर १३० श्लोक हैं। श्री श्याम लाल जी ने इन श्लोकों का जो गद्यानुवाद किया है, वह डोगरी भाषा में है। इस ठेठ डोगरी बोली का केन्द्र जम्मू था और इसकी परिधि पन्द्रह-बीस मील चारों ओर फैली थी। इस इलाके को हम आदि डुग्गर कह सकते हैं। ग्यारहवीं सदी ईसवी के साहिल्ल देव के चम्बा ताम्रपट्ट में इस इलाके को ही दुर्गर कहा गया है। क्योंकि इसके पूर्व का प्रदेश जिसे आज-कल सुमड़ता कहते हैं। ११वीं सदी में सौमट्रिक कहलाता था। तात्पर्य यह निकला कि 'डुग्गर' जो ११वीं सदी ईसवी में संकुचित क्षेत्र था, राजनैतिक प्रभाव से बढ़ते-बढ़ते विशाल इलाका हो गया, जिस में बसोहली, सुमड़ता, रामनगर, भद्रवाह, चम्बा, कांगड़ा आदि उत्तरकाल में समाविष्ट हो गये। यही कारण है कि इस विशाल क्षेत्र की भाषाओं पर जम्मू का ठेठ डोगरी भाषा का प्रभाव पड़ा। यहां तक कि आज हम ठेठ डोगरी भाषा से प्रभावित इन क्षेत्रों को विशाल डुग्गर के रूप में देखने की ओर झुक रहे हैं। श्री श्याम लाल जी ने अपने गद्यानुवाद में डोगरी भाषा के कुछ ऐसे शब्दों का प्रयोग किया है जो इस विशाल डुग्गर में व्यवहृत होते हैं। ऐसे शब्दों में डौ, (जंगल की आग) बिज्ज (बिजली) पिम्मनी (पलक) बैंह (बांस) डिग्गल (बादल) आदि शब्दों का उल्लेख किया जा सकता है। विशाल डुग्गर में प्रचलित डोगरी भाषा के शब्दों का प्रयोग करके अनुवादक महोदय ने वहां के निवासी लोगों के साथ आत्मीयता का सम्बन्ध दृढ़ कर दिया है।

किसी देश की भाषा उस देश के सामयिक लोगों की अनर्घ पैत्रिक सम्पत्ति है जिस का संरक्षण और संवर्धन प्रत्येक देश वासी का परम कर्तव्य है। भारत के ध्वन्यात्मक शरीर में हमारे पिता, पितामह, प्रपितामह आदि पूर्वजों की अनन्त पीढ़ियों की भावनाएं, जीवन के अनुभव संघर्ष, प्रतिक्रियायें आदि मनोवृत्तियां सन्निविष्ट और प्रतिबिम्बित हैं। इसके द्वारा बालकपन से ही हम इन परम्परागत पैत्रिक अनुभवों को निरायास ही अपने जीवन में समाविष्ट कर लेते हैं। यही कारण है कि हम अपने आन्तरिक भावों को जितनी सरलता और सुगमता से अपनी मातृ-भाषा में व्यक्त कर सकते हैं इस प्रकार अन्य किसी भाषा में नहीं कर सकते। इस दृष्टि से भी श्याम लाल

जी ने मेघदूत का डोगरी में गद्यानुवाद करके अपनी मातृ-भाषा की अनुपम सेवा की है जिस के लिये वे डोगरी भाषा के हितैषियों की कृतज्ञता के पात्र हैं।

मैं समझता हूँ कि यदि मेघदूत का डोगरी पद्यानुवाद किया जाता तो वह और भी श्रेष्ठ होता। क्योंकि पद्यमय मूल काव्य का अनुवाद पद्य में होना ही रोचक होता है। कुछ श्लोकों के अनुवाद में कविका वास्तविक अभिप्राय अनुवाद में पूर्णतया व्यक्त नहीं हुआ। एक और बात यह है कि अनुवाद में संस्कृत के वृक्ष वाचक शब्दों जैसे मंदार, लोध्र, कुन्द, बकुल, केतक, जपा वानीर कुरबक प्रियंगु आदि का यथा सम्भव यदि डोगरी अथवा हिन्दी रूपान्तर दिया जाता तो अधिक उपयुक्त होता।

मैं वैयक्तिक रूप से श्री श्यामलाल शर्मा जी को इस रचना पर बधाई देता हूं और आशा करता हूँ कि इस से अन्य डोगरी लेखकों को पर्याप्त प्रोत्साहन मिलेगा।

केदार नाथ शास्त्री

ऋषिभवन, पटेल चौक,

जम्मू।

५. २. ६७

मेघदूत के डोगरी अनुवाद का अध्ययन

महाकवि कालिदास के मेघदूत का डोगरी भाषा में अनुवाद करके हमारे नवयुवक अनुवादक श्री श्यामलाल शर्मा जी ने अनुवाद क्षेत्र के मंच पर डोगरी भाषा को प्रतिष्ठित करने का प्रयत्न किया है। डोगरी भाषा में साहित्य रचना अभी-पच्चीस तीस वर्षों के प्रयास की उपज है। अभी इस में वह लचक, मिठास, प्रगल्भता, प्रौढ़ता बांकापन तथा रसीलापन इतनी जल्दी आना असम्भव है जो कि कालिदास की मौलिक कृति में पाया जाता है। डोगरी भाषा में यह अनुवाद कालिदास के भाषालालित्य की समता नहीं कर सकता। फिर भी डोगरे बांके जवानों ने केवल बोलचाल की भाषा को साहित्यिक स्तर पर लाने का भरसक परिश्रम किया है जिससे डोगरी साहित्य का भविष्य उज्ज्वल दिखाई पड़ रहा है।

महाकवि कालिदास संस्कृत साहित्य की मणिमाला में उज्ज्वल रत्न हैं। प्रो० कीथ के मतानुसार वे आज से १५०० वर्ष हुए इस भारत भूमि पर विराजमान थे। यदि यह पाश्चात्यमत मान्य न भी हो तो भी विक्रम सम्वत् के अनुसार लगभग दो हज़ार वर्ष पहले उनकी जीवनलीला का समय मानना होगा। मेघदूत कवि कालिदास की प्रौढ़ावस्था की कृति है जिसमें उन्होंने निजी प्रतिभा द्वारा कल्पना की सहायता से वर्षा ऋतु के उमड़ते मेघ को मानवता की मानसिक व्यथा को व्यक्त करने के लिये साधन बनाया और मूक प्रकृति को मानव हृदय की भावुकता को प्रकट करने के लिये मुखरित कर दिया। यह सूझ कवि कालिदास को ही सूझी। नहीं तो कब के बादल उमड़ते चले आरहे थे और कभी किसी ने उनके द्वारा सन्देश न भेजा। यह उनकी कल्पना की उड़ान थी जिसने प्राकृतिक घटना को मानव हृदय की वेदना से सम्बद्ध कर दिया।

मेघदूत के निर्माण समय से अब तक साहित्यिक संस्कृत के व्याकरण में भेद नहीं आया। पर बोलचाल की भाषा कभी एक रूप में नहीं रहती। देश काल और व्यक्तिगत उच्चारण के भेद से बोलचाल की भाषा में परिवर्तन अनिवार्य होता है। कालिदास के समय की प्राकृतें जो कि नाटकों में व्यवहृत होती आरही थीं उन का रूपान्तर होता गया और उन्हीं आधुनिक भारतीय भाषा के रूपान्तरों में हिमालय पर्वत की दक्षिण पश्चिम की सपादलक्ष की तलहटी में बोली जाने वाली एक पर्वतीय भाषा डोगरी है।

मेघदूत के अनुवाद अनेक हो चुके हैं—भारतीय भाषाओं में और देशान्तर की भाषाओं में भी। हमारे अनुवादक महोदय ने कालिदास की महिमा को डोगरी भाषा में व्यक्त करने का प्रयत्न किया है। अनुवाद करना एक कला है। मेघदूत सरीखे काव्य को डोगरी गद्य में अनूदित करना कोई सरल काम नहीं जब कि डोगरी भाषा में अनुवाद करने के साधन हैं ही नहीं यथा प्रामाणिक व्याकरण और शब्द कोश। इनमूल ग्रन्थों के अभाव में कोई भी साहित्यिक कार्य करना असम्भव नहीं तो कठिन अवश्य है। हां इतना अवश्य कहा जा सकता है कि यह अनुवाद डोगरी गद्य का एक नमूना है। काव्यरस का आस्वादन पाठक की अपनी-अपनी रुचि पर अधिक आधारित होता है।

भाषाविज्ञान की दृष्टि से इस अनुवाद का महत्व अपना है। डोगरी भाषा का संस्कृतस्रोत से कितना सम्बध है इसकी जानकारी के लिए निम्न लिखित अनुक्रमणिकाएं पुस्तक के अन्त में दिये जाने पर अवश्य लाभकारी सिद्ध होंगी यथा:—

१. मेघदूत अनुवादान्तर्गत तत्सम, तद्भव और विदेशज शब्दों की सूची।

२. संस्कृत के सुबन्त और तिङन्त पद, वाक्य और वाक्यांशों का डोगरी पर्यायात्मक रूप। इस से पता लगेगा कि संश्लिष्ट संस्कृत का विश्लिष्ट डोगरी भाषा में क्या रूपान्तर बन जाता है। ऐसे तुलनात्मक अध्ययन से व्याकरणीय और सांस्कृतिक तथा साहित्यिक

सम्बन्ध भारत की भाषाओं के प्राचीन और अर्वाचीन रूपों में स्थापित किया जा सकेगा। उदाहरण रूप में डोगरी के कुछ एक तदभव शब्दों को लीजिये जो मेघदूत के अनुवाद में प्रयुक्त हुए हैं। यथा शावां, छावां, छामा (छाया), बरा (वर्ष), आत्तर (आतुर), बसां (विश्राम) बिज्ज (विद्युत्), नन्द (आनन्द) गास (आकाश) पंक्ताल (पंक्ति) वैंह (वंशवृक्ष), कनियां (कणिका), आस्रमां (आश्रय) सिज्जन (सिंचन)।

इसी प्रकार तत्सम देशज और विदेशज शब्दावली दी जा सकती है। उत्तर मेघ के १३वें श्लोक के डोगरी अनुवाद को लीजिये। यथाः—

पत्रश्यामाः=पत्रें आङू सौले

दिनकर स्पर्धिनो=सूरजै दी बरोबरी करने आले

यत्र=जित्थे

वाहाः=घोड़े

शैलोदग्रा=पहाड़ें जेडे

स्वामिव=तुसें आङर

करिणो=हाथी

वृष्टिमन्तः = बरै दे

प्रभेदात्=मत्थे दा मद चौने कन्ने

योधाग्रण्यः=अब्बल नम्बर दे जोधे

प्रतिदशमुखं = रावणै दे जोड़ै दे

संयुगे=लड़ाई च

तस्थिवांसः=खड़ोने आले

प्रत्यादिष्टा भरणरुचयः=जिन्हें गहनें दी शोभा गी मात कीता दा

चन्द्रहासव्रणांके=तलवारी दे फट्टें दी निशानी पे दे

इस छानबीन से पता चलेगा कि यदि कालिदास के समय की प्राकृत में (शौरसेनी) अर्थात उस समय की बोलचाल की डुग्गर प्रान्त की भाषा में मेघदूत का अनुवाद मिल सकता तो आज के इस डोगरी रूपान्तर के साथ तुलना से पता कर पाते कि इन दो हजार वर्षों की अवधि में भाषा के दो रूपों में कितना अन्तर आगया है।

साहित्य क्षेत्र में प्रमुख ग्रन्थों के प्रान्तीय भाषा में ऐसे अनुवाद इतिहास संस्कृति और भाषाविज्ञान की दृष्टि से पाठकों के लिए अतीव सहायक और लाभदायक हो सकते हैं। और आधुनिक भाषाओं के भण्डार को प्रचुरतया भर सकते हैं। डोगरी भाषा के लिये यह

और भी आवश्यक है कि इस में गद्य अधिक से अधिक मात्रा में लिखा जाये जिस से इस का शब्द भण्डार भरपूर हो सके। यूं भी हमारे अनुवाद कर्ता का प्रयास सराहनीय है कि वे डुग्गर जैसे ऊसर भाषाक्षेत्र को उर्वर भाषाभूमि बनाने में लगे हुए हैं। आशा है वे जन्मभूमि और मातृभाषा की सेवा में उत्तरोत्तर अपना लगाव और चाव बढ़ाते रहेंगे और अपने साथियों और अनुयायियों के लिए पथप्रदर्शक का काम देंगे।

५४४/१६ डी, चण्डीगढ़। —गौरीशङ्कर

६. २. ६७

A REVIEW

It is a pleasure to look through your Dogri translation of the Megha dūta. Although the tyranny of my other engagements does not permit me to prepare a systematic review, I have enjoyed the syntactical treatment in your translation. For instance on page 66, the last line of second verse has a compound in the very beginning. You have happily rendered it into full sentence, which proves your fidelity to the genius of Dogri. On page 1, in the second verse the use of the word *hirkhi* is quite happy, although in the second line concerned there is no corresponding word for it in sanskrit.

But your omission of tone entirely in Dogri *raunda* page 1, lst verse, 3rd line could be improved by putting a /h/ after /r/. When in the second verse, same page you could write *p-haṛai* add a /h/ as suggested above.

Siddheshwar Varma.

Chandigarh
6-2-67.

अपने पासे था

साईंसदानें मूजब मेघ 'धूमज्योतिः सलिलमरुतां संनिपातः' ऐ धूं, लो, पानी ते बाऊ दा मेल ऐ। पर कालिदास हुन्दा मेघदूत मनुक्खै दी डूंगी ते अन्दरली आध्यात्मिकता दी ताङ ते जुआनी ते हिरखै दी हीखी इनें दौनें भावनाएं दा नेआ सुन्दर मेल ऐ जे मन ठ्लैपे ते शिवत्व, सुन्दरता ते कल्याण भावना कन्ने चगत हुन्दा ऐ। कालेज दे दिनें दी हीखी ही मेघदूतै दा डोगरी अनुवाद करना ऐ।

प्रार कुद गेआ तां ए बी डूरी पेआ। कुद डुग्गर दी पचमड़ी, नैनीताल ते दार्जलिंग ऐ। सौन-भाद्रों इच कुद जाइयै कालिदास हुन्दे यक्षमित्तरें कन्ने जफियां पाइयै कोई बी हिरखी अपने स्नेए भेजने दी प्रार्थना करी सकदा ऐ। कुद बदल गासै बिचरने आले इन्दर देवता दे अनुचर नईं सारें कन्ने रली मिलियै रौह्ने आले उट्ठने-बौह्ने आले सज्जन मित्तर हुन्दे न।

जतन कीता ऐ जे अमर कवि दियां भावझातियां मातृभाषा राहें अपने देसवासियें गी थोई जान। दिक्खियै दस्सो डोगरी इच ए समर्थ ऐ जा नईं।

परम पूज्य गुरु पद्मभूषण डा० सिद्धेश्वर वर्मा, आदरजोग प्रो० गौरीशंकर, श्री केदारनाथ शास्त्री ते श्री रामनाथ शास्त्री होरें ए अनुवाद पढ़ेया ऐ। उन्दे बचार इस ग्रन्थै दी भूमका न। उनें जेकिश लिखेआ ऐ ओ पाठकें, लेखकें ते अनुवादकें गित्तै सोचने ते अमल करने जोग ऐ इनें सारें मन्ननथार विद्वानें दा शीर्वाद डोगरी गित्तै बड़ा शुभ ते मंगलकारी ऐ।

श्रीमती शक्तिशर्मा ते चिरञ्जीवी मृदुला दा सहयोग बड़ा सराहने जोग रेआ ऐ। दौन्नें दा बड़ा धन्नबाद ऐ।

श्यामलाल शर्मा

१६५, विजयगढ़ जम्मू।
२०-२-६७

मेघ-दूतम्

पूर्व मेघ

कश्चित्कान्ताविरह-गुरुणा स्वाधिकारात्प्रमत्तः
शापेनास्तंगमितमहिमा वर्ष-भोग्येन भर्तुः ।
यक्षश्चक्रे जनकतनया-स्नानपुण्योदकेषु
स्निग्धच्छाया-तरुषु वसतिं रामगिर्याश्रमेषु ॥१॥

१. रामगिरिपर्वतै दे आश्रमे इच, जित्थें सीता माता दे श्नान करने कन्ने पवित्तर होए दे नाड़ू (शमशम) बगदे न ते बूटें दियां ठण्ढियां ते घनियां शावां न, इक यक्ष रौन्दा हा । अपनी नौकरी इच लापर्वाई करने करी कुबेर राजा कशा उसी इक बरा अपनी प्यारी लाड़ी कशा बक्ख रौने ते नौकरी दा हटने करी नमोशी दा समा कट्टने दी सजा होई दी ही ।

तस्मिन्नद्रौ कतिचिदबलाविप्रयुक्तः स कामी
नीत्वा मासान्कनकवलयभ्रंशरिक्तप्रकोष्ठः ।
आषाढस्य प्रथम-दिवसे मेघमाश्लिष्ट-सानुं
वप्रक्रीड़ापरिणतगजप्रेक्षणीयं ददर्श ॥२॥

२. उस्सै पर्वते उप्पर रौंदे उस हिरखी गी किश महीने बीती गे । अपनी प्यारी गोरी कशा बछोड़े ते बजोगै करी, बचारा लिस्सा होई गेया हा । बायें पे दे सुन्ने दे कड़े डुण्डुएं कशा ढिल्कीगे हे ।

हाड़ म्हीने दी पहली गी उस दिक्खेया जे प्हाड़ै दे किङ्गरे उप्पर इक काला डिग्गल आई चढ़ेया ऐ । ओ इयाँ बझोंदा हा जियां कोई मस्ते दा हाथी अपने दन्दें कन्ने किंगरे गी खुल्लै करदा होऐ ।

तस्य स्थित्वा कथमपि पुरः कौतुकाधानहेतो
रन्तर्वाष्पश्चिरमनुचरो राजराजस्य दध्यौ ।
मेघालोके भवति सुखिनोऽप्यन्यथावृत्ति चेतः
कण्ठाश्लेषप्रणयिनि जने किं पुनर्दूरसंस्थे ।।३।।

३. मनै इच हीखियां बझालने आले काले डिग्गलै सामनै खड़ोइऐ ते अन्दरा उठदे हौके अक्खीं इच डक्किऐ कुबेर राजे दा नौकर ओ यक्ष मता चिर उसी दिक्खदा गै रेआ। बरसातीं बदलैंगी दिक्खिऐ किट्ठे रौन्दे प्रेमी लोक बी आत्तर होइ जन्दे न। उनें बचारें दा के गलाना जेड़े अपने प्रेमियें गी गलै जप्फी पाने दी हीखी इच दूर परदेस बैठे दे होण ।

प्रत्यासन्ने नभसि दयिताजीवितालम्बनार्थी
जीमूतेन स्वकुशलमयीं हारयिष्यन्प्रवृत्तिम् !
स प्रत्यग्रैः कुटजकुसमैः कल्पितार्घाय तस्मै
प्रीतः प्रीतिप्रमुखवचनं स्वागतं व्याजहार ।।४।।

४. प्रेमका दी जिंद सलामती दी हीखी आला ओ यक्ष सौण म्हीना कोल आई जाने उप्पर अपने सुख-सांदै दा स्नेआ डिग्गलै हत्थें अपनी लाड़ी गी भेजने गित्तै नमे नमे बोगड़ फुल्लें दा अर्घ बनाइऐ ते पर्सिन्न होइऐ मिट्ठे २ बोलें कन्ने स्वागत करन लगा ।

धूमज्योतिः सलिलमरुतां संनिपातः क्व मेघः
सन्देशार्थाः क्व पटुकरणैः प्राणिभिः प्रापणीयाः ।
इत्यौत्सुक्यादपरिगणयन्गुह्यकस्तं ययाचे
कामार्ता हि प्रकृतिकृपणाश्चेतनाचेतनेषु ।।५।।

५. कुत्थें ते जड़ डिग्गल, जेड़ा धूँ, लो, पानी ते बाऊ दा मेल हुन्दा ऐ; ते कुत्थें स्नेएं दे अर्थ दे भाव, जिनेंगी चतरसुजान मनुक्ख गै पजाने जोग हुँदे न ।

मनै दी गल्ल झट पजाने दी तौले आला ओ यक्ष उस गल्लै दी परवा नईं करिऐ उस बदलै गी गै जाचना करन लगा ।

सच ऐ जेड़े कामपीड़ा कन्ने आत्तर हुँदे न उनेंगी सैभन गै जड़ ते चेतन चीज़ें इच छिंडा नईं बझोंदा । फर्क नेईं सई हुन्दा ।

जातं वंशे भुवनविदिते पुष्करावर्तकानाँ
जानामि त्वां प्रकृतिपुरुषं कामरूपं मघोनः ।
येनार्थित्वं त्वयि विधिवशाद्दूरबन्धुर्गतोऽहं
याञ्चा मोघा वरमधिगुणे नाधमे लब्धकामा ।।६।।

६. मिकी पता ऐ जे तुस सारे संसारै इच मन्ने-प्रमन्ने, उच्चे पुष्करावर्तक बद्लें दे कुलै चा ओ, राजे इंदरै दे नजीकी आले बिश्वास पात्तर कर्मचारी ओ ते इच्छाधारी ओ । भागें दी गल्ल ऐ जे अऊँ अपनी प्रेमका कशा बिछड़िऐ इत्थें पेदां । इस करी तुन्दे गोचरी इक अरज ऐ । बडडें कशा मंगने उप्पर 'ना' बी थोई दी चंगी, पर भशुन्ने कशा गल्ल तोड़ चढ़ी दी बी खुट्टी ।

सन्तप्तानां त्वमसि शरणं तत्पयोद प्रियाया:
सन्देशं मे हर धनपतिक्रोधविश्लेषितस्य ।
गन्तव्या ते वसतिरलका नाम यक्षेश्वराणां
बाह्योद्यानस्थितहरशिरश्चन्द्रिकाधौतहर्म्या ॥७॥

७. हे बद्दल जी ! तत्तड़े बजोगियें दे तुस्सै स्हारे ओ । कुबेर राजे दे रोऐ करी गोरी थवां बिच्छड़े दे बजोगिऐ दा माढ़ा स्नेआ उस गित्तै लई जाओ । तुसें यक्षें दी नगरी अलकापुरी गी जाणा ऐ । बाहरले बागें बराजमान शिवें दे मत्थे दी चाननी कन्ने धनोई दियां चिट्टियां दुद्ध उत्थों दियां मारतां न ।

त्वामारूढं पवन-पदवीमुद्गृहीतालकान्ता:
प्रेक्षिष्यन्ते पथिकवनिता: प्रत्ययादाश्वसंत्य: ।
क: सन्नद्धे विरहविधुरां त्वय्युपेक्षेत जायां
न स्यादन्योऽप्यहमिव जनो य: पराधीनवृत्ति: ॥८॥

८. बाण्डै गे दे मशाफरें दियां लाड़ियां उन्दे आई पुज्जने दियां हीखियां बझालिऐ अपनियां खिलरी दियां लटां चुक्किऐ वाऊ दी लैहरें उप्पर चढ़े दे तुसेंगी चायें २ दिक्खङ्न ।

तुस गासै इयां सज्जे दे होवो तां कुण नेआ होर मनुक्ख होग जेड़ा मेरे आङू परतन्त्र नईं होऐ ते अपनी बजोगन लाड़ी दी इयां उपेक्षा करी ओड़ै ।

तां चावश्यं दिवसगणनातत्परामेकपत्नी
मव्यापन्नामविहतगतिर्द्रक्ष्यसि भ्रातृजायाम् ।
आशाबन्धः कुसुमसदृशं प्रायशो ह्यङ्गनानां
सद्यःपाति प्रणयि हृदयं विप्रयोगे रुणद्धि ।।६।।

६. खुल्ले गासै जन्दे तुसें गी अपनी पतिब्रर्ता भाबी (मेरी लाड़ी) जरूर लब्बग। ओ वजोगै दे दिन गिनदी ते इस्सै हीखी उप्पर जीन्दी ऐ। इस्त्रियें दे फुल्लें आह्नु कोमल ते झट्ट गै त्रुट्टी जाने आले प्रेम भरे हिरदे गी वजोगै इच हीखी दी तन्द गै साम्बी रखदी ऐ।

मन्दं मन्दं नुदति पवनश्चानुकूलो यथा त्वां
वामश्चायं नदति मधुरं चातकस्ते सगन्धः ।
गर्भाधानक्षणपरिचयान्नूनमाबद्धमालाः
सेविष्यन्ते नयन-सुभगं खे भवन्तं बलाकाः ।।१०।।

१०. डुआरी 'च मदत देने आली बा तुसें गी बल्लें २ चला करदी ऐ। इयां मौजै 'च आये दा पपीआ तुन्दे खब्बै पासै कलोलां करदा जादा ऐ। तुस इन्ने शैल लब्दे ओ जे तुन्दे कन्ने मिलियै गर्भ धारण करने दियां मैहरम बगलियां गासै उप्पर पंगतियां बन्निऐ तुन्दा स्वागत करङन।

कर्तुं यच्च प्रभवति महीमुच्छलींध्रामवन्ध्यां
तच्छ्रुत्वा ते श्रवणसुभगं गर्जितं मानसोत्काः ।
आकैलासाद्विसकिसलयच्छेदपाथेयवन्तः
सम्पत्स्यन्ते नभसि भवतो राजहंसाः सहायाः ॥११॥

११. धरती उप्पर खुम्बां जमाने आली, उसी उपजाऊ बनाने आली ते (लोकें दे) कन्नें गी प्यारी लग्गने आली तुन्दी गर्ज सुनिऐ मानसरोवर पुज्जने गी सोहगे राजहैन्स नन्दड़ुएं दी नहारी लइऐ कलाश पर्वतै तोड़ी गास्सै उप्पर तुन्दे साथी बनी जाङन ।

आपृच्छस्व प्रियसखममुं तुङ्गमालिङ्ग्य शैलं
वन्द्यैः पुंसां रघुपति-पदैरङ्कितं मेखलासु ।
काले काले भवति भवतो यस्य संयोगमेत्य
स्नेहव्यक्तिश्चिरविरहजं मुञ्चतो वाष्पमुष्णम् ॥१२॥

१२. इस अपने मित्तर उच्चे पर्वतै गी गलें मिलिऐ नाढ़े कशा बिदा लौ । एदिएं मझाटलियें रिढ़ियें उप्पर रामचन्द्र जी दे पैरें दे नशान लग्गे दे न जिनें गी लोक बन्ददे न । हर बरसांती गै मेल होने करी इन्ने चिरै दे बजोगै गी अपने तत्ते अथरूएं रस्तै कढ्डिऐ तुन्दे गित्तै ओ अपना प्रेम दसदा ऐ ।

मार्गं तावच्छृणु कथयतस्त्वत्प्रयाणानुरूपं
सन्देशं मे तदनु जलद श्रोष्यसि श्रोत्रपेयम् ।
खिन्नः खिन्नः शिखरिषु पदं न्यस्य गन्तासि यत्र
क्षीणः क्षीणः परिलघु पयः स्रोतसां चोपभुज्य ॥१३॥

१३. पहलें मेरे कशा जियां जियां तुसें जाना ऐ उस यात्रा दा रस्ता सुनी लौ, फिरी कन्नें गी प्यारा लग्गने आला स्नेआ सुनेओ। हुट्टी जागेओ तां पर्वतें दे किंगरें उप्पर बसां करदे जायो। बरिऐ खाली होई जाने पर नाड़ुएं दा हल्का पानी विन्द २ पीन्दे जायो।

अद्रेः शृंगं हरति पवनः किंस्विदित्युन्मुखीभि
दृष्टोत्साहश्चकितचकितं मुग्ध-सिद्धाङ्गनाभिः ।
स्थानादस्मात्सरसनिचुलादुत्पतोदङ्मुखः खं
दिङ्नागानां पथि परिहरन् स्थूल-हस्तावलेपान् ॥१४॥

१४. "ए बा कोई पहाड़ै दा किंगरा ते नईं डुआरिऐ लई जा करदी !" मुण्डी उबड़ी चुकिकऐ सिद्धें दियां सिद्दियां (भोलियां) लाड़ियां चवातै कन्ने तुन्दा उत्साह दिक्खडन। सैले बञ्जें आले इस थारै थमां तुस सिद्दे पहाड़ै आली बक्खी गासै उप्पर उड्डेओ। ते कन्ने चकूटें दे हाथियें दी सुण्डें दी मारै थमां अपना बचा करदे जायो।

रत्नच्छाया-व्यतिकर इव प्रेक्ष्यमेतत्पुरस्ता-
द्वल्मीकाग्रात्प्रभवति धनुः खण्डमाखण्डलस्य ।
येन श्यामं वपुरतितरां कांतिमापत्स्यते ते
बर्हेणेव स्फुरितरुचिना गोपवेषस्य विष्णोः ॥१५॥

१५. सामनै बरमी उप्पर बन्दोई दी सतरंगी पीङ रत्नें दी मिली जुली किरणें दी लिश्कै आङू शैल लब्बा करदी ऐ। एदे कन्ने थुआड़ी सौली देह इयां चमकन लगग जियां चमकदार मोर फङे कन्ने गोपाल रूपी विष्णु भगवान दी सौली देह चमकदी ऐ।

त्वय्यात्तं कृषिफलमिति भ्रूविकारानभिज्ञैः
प्रीतिस्निग्धैर्जनपदवधूलोचनैः पीयमानः।
सद्यः सीरोत्कषणसुरभि क्षेत्रमारुह्य मालं
किंचित्पश्चाद्व्रज लघुगतिर्भूय एवोत्तरेण ॥१६॥

१६. "खेतरें दी पैदावार तुन्दे गोचरी ऐ" इस करी अक्खीं दे छल-छिद्रें थमां अनजान ग्राईं जनानियां हिरखी नजरें कन्ने तुसेंगी दिखङन। तुस 'माल' नां दे खेतरै इच जाई बरयो, जित्थें हल बुढ़ने करी धरती दी सगन्ध आवै दी होग। फिरी बिन्द हल्के होइऐ तुस तौले गै उत्तर दिशा पासै मुड़ी जायो ।

त्वामासार- प्रशमितवनोपप्लवं साधु मूर्ध्ना
वक्ष्यत्यध्वश्रमपरिगतं सानुमानाम्रकूटः ।
न क्षुद्रोऽपि प्रथमसुकृतापेक्षया संश्रयाय
प्राप्ते मित्रे भवति विमुखः किं पुनर्यंस्थोच्चैः ।।१७।

१७. सफरै कन्नै हुट्टे दे तुसें गी आम्रकूट पर्वत जेदियां डौवां तुसें बाछड़ें कन्ने शान्त कीती दियां न, झट सिर मत्थै बहाली लैग। प्हैलें कीती दी भलाई गी सोचिऐ भलाई करने आले दे कोल औने उप्पर लौके फौके लोक बी मुंह नई मोड़दे। ए ते भला एडा बड्डा आम्रकूट पर्वत ऐ।

छन्नोपान्तः परिणतफलद्योतिभिः काननाम्रै-
स्त्वय्यारूढे शिखरमचलः स्निग्धवेणीसवर्णे।
नूनं यास्यत्मरमिथुनप्रेक्षणीयामवस्थां
मध्ये श्यामः स्तन इव भुवः शेष-विस्तार-पाण्डुः ।।१८।

१८. चिकनी चोटी आङ्गू काले तुन्दे पर्वतै दे किंगरे उप्पर बौने करी पक्के दे फलें कन्ने सोभदे जंगली अम्बें दे कन्ने खटोए दा आम्रकूट पर्वत बरकारा दा काला ते आसे पासे दा चिट्टे रंगै दे धरती दे स्तनै आङ्गू जरूर गै देवतें दियें जोड़ियें दे दिखने जोग बस्था गी प्रापत होग।

स्थित्वा तस्मिन् वनचर-वधू-भुक्तकुञ्जे मुहूर्तं
तोयोत्सर्गद्रुततरगतिस्तत्परं वर्त्मतीर्णः ।
रेवां द्रक्ष्यस्युपलविषमे विन्ध्यपादे विशीर्णां
भक्तिच्छेदैरिव विरचितां भूतिमंगे गजस्य ॥१९॥

१९. किश चिर आम्रकूटै दे किंगरे उप्पर बसोइऐ जित्थे झूड़ें ते गुफें 'च बनचारिएं दियें इस्त्रिएं नन्दमंगलाचार कीते दे न ते बरखा बराइयै हौले होए दे तुस तौले गै गेडा रस्ता टप्पियै रेवा नदी दिखगे ओ। ए नदी विन्ध्याचल दी घाटी 'च अड्डोखोड़ वट्टें करी खिल्लरी दी इयां सेई हुन्दी ऐ जियां शिंगारे दे हाथी दे मत्थे उप्पर चित्तर-कारी दियां लीकरां पइ दियां होन।

तस्यास्तिक्तैर्वनगज- मदैर्वासितं वान्तवृष्टि-
र्जम्बूकुञ्जप्रतिहतरयं तोयमादाय गच्छेः ।
अन्तःसारं घन तुलयितुं नानिलः शक्ष्यति त्वां
रिक्तः सर्वो भवति हि लघु पूर्णता गौरवाय ॥२०॥

२०. बरखा बराहने करी खाली होए दे तुस जामनुएं दे कुञ्जें करी रुके दे ते मस्त हाथियें दे मत्थे दे मदै कन्ने सगन्धत होए दे पानिएं गी लइऐ अग्गें बदेओ। इयां गब्बर होए दे तुसें गी बा ताईं-तुआईं नईं हलाई सकग। की जे अन्दरा खाली होवो तां हल्कापन हुन्दा ऐ। पर सम्मे-सीने होवो तां सोभा हुन्दी ऐ।

नीपं दृष्ट्वा हरितकपिशं केसरैरर्धरूढै-
राविर्भूतप्रथममुकुलाः कन्दलीश्चानुकच्छम् ।
जग्ध्वारण्येष्वधिक-सुरभि गन्धमाघ्राय चोर्व्याः
सारंगास्ते जललवमुचः सूचयिष्यन्ति मार्गम् ।।२१ ।

२१. अध्दे-अध्दे निकले दे केसरें कन्ने सैले ते मटयाले रंगे आले कदम्बें दे फुल्लें गी दिक्खियै ते खोभे 'च निकली दी पहली कलिवें आली गन्दलें गी खाइयै, ते बनै 'च पृथ्वी दी तेज सुगन्धि गी सिंघियै काले भौरे, हिरन ते हाथी, पानी दियां फुङा बराहन्दे तुसेंगी रस्ता दसङन ।

अम्भोबिन्दुग्रहणचतुराँश्चातकान्वीक्षमाणाः
श्रेणीभूताः परिगणनया निर्दिशन्तो बलाकाः ।
त्वामासाद्य स्तनितसमये मानयिष्यन्ति सिद्धाः
सोत्कम्पानि प्रियसहचरीसम्भ्रमालिङ्गितानि ।।२२।।

२२. सिद्ध गन्धर्व; चातक पक्खरुएं गी जेड़े पानी दियां फुङा पुड़छने 'च बड़े चतर न दिखदे न। पंगतालियां बन्नियै उड़दियें बगलियें गी दसदे ते इक इक करी गिनदे न । तुन्दे गर्जने उप्पर काहलियां होइयै जिसलै सिद्धें दियां लाड़ियां उनें गी घोटियै जप्फियां पाङन तां ओं सिद्ध लोक तुन्दा बड़ा धन्नवाद करङन ।

उत्पश्यामि द्रुतमपि सखे मत्प्रियार्थं यियासोः
कालक्षेपं ककुभसुरभौ पर्वते पर्वते ते ।
शुक्लापांगैः सजलनयनैः स्वागतीकृत्य केकाः
प्रत्युद्यातः कथमपि भवान्गन्तुमाशु व्यवस्येत् ।।२३।।

२३. मिकी बझोआ करदा ऐ जे भायें तुसें गी मेरी खातर तौल बी करने दी मरजी होग तां बी तुसेंगी हर पवतै उप्पर चिर लग्गी जानां ऐ। हर पर्वत जेड़ा कुटज फुल्लें कन्नें सगन्धत होए दा ऐ, ते चिट्टे डोरे आली अक्खीं 'च खुशी दे अत्थरूं भरियै मोर अपनिएं कूकें कन्ने तुन्दा स्वागत करङन। फी बी तुसें तौली गै गैं पुट्टने दा जतन करना।

पाण्डुच्छायोपवन-वृतयः केतकैः सूचिभिन्नै-
र्नीडारम्भैर्गृहबलिभुजामाकुलग्रामचैत्याः ।
त्वय्यासन्ने परिणतफलश्यामजम्बूवनान्ताः
सम्पत्स्यन्ते कतिपयदिनस्थायिहंसा दशार्णाः ।।२४।।

२४. जिसलै तुसें दशार्णा लाके 'च पुज्जना ऐ उसलै उत्थों दे बागें दियां बाड़ां केतक फुल्लें दिएं खुलदिएं डोडिएं कन्ने चिट्टियां होई जाङन। ते ग्रायें दे पवित्तर बड़ बड़ूटें पर कायें दे नमें आल्हड़े बनाने करी गहमा-गहमी होई जाग। ते काले पक्के दे ढल्लें कन्ने जामुनुएं दे बन काले होई जाङन। राज हैन्सें उत्थे थोड़ा चिर गै टिकना ऐ।

तेषां दिक्षु प्रथित-विदिशा-लक्षणां राजधानीं
गत्वा सद्यः फलमविकलं कामुकत्वस्य लब्धा ।
तीरोपान्तस्तनित- सुभगं पास्यसि स्वादु यस्मा-
त्सभ्रूभंगं मुखमिव पयो वेत्रवत्याश्चलोर्मि ।।२५।।

२५. विदिशा नां दी लोक प्रसिद्ध राजधानी 'च पुज्जियै तुसें गी लाड लाने दा असली नन्द प्रापत होई जाग ! जिसलै तुस चंचल लहरें आली वेत्रवती नदी दे कण्डै जाइयै गर्जगेओ ते मिट्ठा पानी पीगेओ तुसेंगी ईआं बझोग जे नां नां करदे प्यारी दे मुहैं गी चुम्मी लैता होऐ ।

नीचैराख्यं गिरिमधिवसेस्तत्र विश्रामहेतो -
स्त्वत्सम्पर्कात्पुलकितमिव प्रौढ-पुष्पैः कदम्बैः ।
यः पण्यस्त्री-रति-परिमलोद्गारिभिर्नागराणा -
मुद्दामानि प्रथयति शिलावेश्मभियौवनानि ।।२६।।

२६. उत्थें बसां करना होग तां 'नीचै' नां दे पर्वतै उप्पर करेओ । थुआड़े स्पर्श करने करी उसी सरकण्डे जन निकली औडन । नुआडे फुल्ल पूरे खिड़ी जाडन। नुआड़ियें गुफें विचा निकलदी, रमन करदो बेस्त्राएं दी रति गन्ध नगर बासियें दी उठदी जुआनी दा पता दिन्दी ऐ ।

विश्रान्तः सन्व्रज वननदीतीरजानां निषिञ्च -
न्नुद्यानानां नवजलकणैर्यूथिकाजालकानि ।
गण्डस्वेदापनयनरुजा क्लांतकर्णोत्पलानां
छाया- दानात्क्षण- परिचितः पुष्पलावी- मुखानाम् ।।२७।।

२७. किश बसां करिऐ चली पवेओ ते वन नदी दे कण्डै बागैं 'च चमेली दी कलियें गी नमें पानी दी फुहारें कन्ने त्रौंके करदे जायो, ते फुल्ल चुनने आलियें मालनें दी गल्लें उप्पर जित्थें कन्नें पे दे कमल परसा पूंजी २ हिस्सी गे न, शां करिऐ किश वाकफी कड्डी लैयो।

वक्रः पन्था यदपि भवतः प्रस्थितस्योत्तराशां
सौधोत्सङ्गप्रणयविमुखो मा स्म भूरुज्जयिन्याः ।
विद्युद्दामस्फुरितचकितैस्तत्र पौराङ्गनानां
लोलापांगैर्यदि न रमसे लोचनैर्वञ्चितोऽसि ।।२८।।

२८. उत्तर दिशा गी जन्दे होई तुसेंगी दना फराटी ते पौग, पर उज्जैनी दे मैहलें पियां मौंटियाँ दिखना नई भुल्लेओ। बिज्जै दी मिलका कन्ने भलखोई दिएं नागरु गोरियें दे चैंचल ते त्रिक्खे नयनें दा नन्द नईं लैता तां तुस ठगोइगै गे समझो।

वीचिक्षोभस्तनितविहगश्रेणिकाञ्चीगुणायाः
संसर्पन्त्याः स्खलितसुभगं दर्शितावर्तनाभे ।
निर्विन्ध्यायाः पथि भव रसाभ्यन्तरः सन्निपत्य
स्त्रीणामाद्यं प्रणयवचनं विभ्रमो हि प्रियेषु ॥२९॥

२९. अग्गे बत्ता तुसें गी निर्विंध्या नदी लब्बग । चैंचल लहरें दे उप्पर गीत गांदी पक्खरुएं दी पङ्ताल गै उदी लकै दी जंजीरी (सेई हुन्दी) ऐ, ते मस्तानी चालै इच डोलके खन्दी जेहड़ी भौंर रूपी धुन्नी दा झलाका दिन्दी ऐ, ओदे हिरखै दे अमृतै गी चखदे जायो। गोरियें दा अपने प्रेमियें गी हावभाव दस्सना गै हिरखै दे पहले बोल वलावे हुँदे न।

— —— —

वेणीभूतप्रतनुसलिला तामतीतस्य सिन्धुः
पाण्डुच्छाया तटरुहतरुभ्रंशिभिर्जीर्णपर्णैः ।
सौभाग्यं ते सुभग विरहावस्थया व्यञ्जयन्ती
कार्श्यं येन त्यजति विधिना स त्वयैवोपपाद्यः ॥३०॥

३०. उस निर्विंध्या नदी गी टप्पिऐ हे भागवान् ! ईआं करेओ जे सिंधु नदी जेड़ी लिस्सी होने करी (पानी घटेदा होने करी) चोटी जन बनी गेदी ऐ; कण्डै जम्मे दे बूटें परा पत्तर डिग्गने करी जेड़ी पीली भुस्स बनी दी ऐ; ते अपनी बजोगै आली दशा कने तुन्दे प्रीतम होने दा सुहाग प्रकट करा करदी ऐ, तुस नेआ जतन करो जे ओ अपना लिस्सापन छोड़ी ओड़ै (अर्थात तुन्दे बरखा बरहाने करी मते पानी आली होई जा)।

— —

प्राप्यावन्तीनुदयनकथाकोविदग्रामवृद्धा -
न्पूर्वोद्दिष्टामुपसर पुरीं श्रीविशालां विशालाम् ।
स्वल्पीभूते सुचरितफले स्वर्गिणां गां गतानां
शेषैः पुण्यैर्हृतमिव दिव कांतिमत्खण्डमेकम् ।।३१।।

३१. अवन्ती देसै 'च पुज्जिए जित्थे ग्रायें दे वृद्ध लोक उदयन राजे दी कत्थें दे भलेयां जानकार न, तुस पहले दस्सी दी समृद्ध विशाला नगरी गी जायो। ए नगरी सुर्गै दा टोटा ऐ, ईआं बझोंदा ऐ जे सुर्गै दा नन्द भोगियै पुन्न खीण होने उप्पर परतोई औने आलें दे रैंदे खुन्दे पुन्नें दा पर्ताप ऐ ।

दीर्घी कुर्वन् पटुमदकलं कूजितं सारसानां
प्रत्यूषेषु स्फुटितकमलामोदमैत्री कषायः ।
यत्र स्त्रीणां हरति सुरतग्लानिमंगानुकूलः
शिप्रावातः प्रियतम इव प्रार्थना चाटुकारः ।।३२।।

३२. जित्थें बड्डैलें शिप्रा नदी थमां औंदी बा चापलूस प्रेमी आङ् अंगें गी सुख देने आली हुँदी ऐ ते रतिक्रीड़ा करी होए दे मटयारें दे हुट्टनै गी चकांदी ऐ। ओ बा खिड़े दे कमलें दी सगन्धि कन्ने करबोई आली हुँदी ऐ ते सारस पक्खरुएं दी मस्त ते उच्चियें कूकें गी दूर २ लेई जन्दी ऐ।

जालोद्गीर्णैरुपचितवपुः केशसंस्कारधूपै -
र्बन्धुप्रीत्या भवनशिखिभिर्दत्तनृत्योपहारः ।
हर्म्येष्वस्याः कुसुमसुरभिष्वध्वखेदं नयेथा ,
लक्ष्मीं पश्यंल्ललितवनितापादरागांकितेषु ॥३३॥

३३. बारियें दियें जालियें बिच्चा निकलदे धूं जिन्दे कन्ने गोरियां अपने बाल कशबोदार करदियां न' उन्दे कन्ने तुन्दे शरीरै दा फला बदग । ते पालतू मोर तुसेंगी अपना भ्रा मन्नियै नाच दसङन । उन्दी ईऐ भेटा होनी ऐ । महलें दी छत्तें उप्पर जनानिएँ दे पैरें लग्गे द अल्ते दे नशानें दी शोभा दिक्खियें तुस अपनी बत्ता दा हुट्टन तुआरी लैयो ।

हारांस्तारांस्तरलगुटिकान्कोटिशः शङ्खशुक्तीः,
शष्पश्यामान्मरकतमणीनुन्मयूखप्ररोहान् ।
दृष्ट्वा यस्यां विपणिरचितान्विद्रुमाणां च भंगा -
न्संलक्ष्यन्ते सलिलनिधयस्तोयमात्रावशेषाः ॥३४॥

३४. जित्थें (बिक्री आस्तै) बजारें 'च सज्जे दे मोतियें दे कण्ठे आले आले हार, करोड़ां सैंख ते सिप्पियां, नमे नमे घा आङू डूगे नील सब्जे. जिन्दियां किरणां उबड़ियां जांदियां न' ते लाल मुंगे दे टुकड़े दिक्खियै ईयै बझोंदा ए जे समुद्रै च' शड़ा पानी गै रेई गेया ऐ । ते सारे रत्न मोती इस विशाला नगरी च टुरी आये न' ।

प्रद्योतस्य प्रियदुहितरं वत्सराजोऽत्र जह्रे
हैमं तालद्रुमवनमभूदत्र तस्यैव राज्ञः ।
अत्रोद्भ्रांतः किल नलगिरि स्तम्भमुत्पाट्य दर्पा-
दित्यागन्तूंन्रमयति जनो यत्र बन्धूनभिज्ञः ॥३५॥

३५. जित्थे पलोकियें गल्लें दे जानकार, बाहरा दा आये दे मित्तरें सज्जनें दा मन, इनें गल्लें कन्ने परचांदे न'। इत्थें वत्सराज (उदयन) होरें प्रद्योत हुँदी प्यारी धी कड्डी ही। इत्थे उंदा (प्रद्योत राजा हुंदा) गै सनैहरी ताड़ बृक्षें दा वन हा। ताईं पासै मस्ते दा नलगिरि हाथी अपना थम्म पुट्टिऐ मस्ती कन्ने फिरदा हा।

भर्तुः कण्ठच्छविरिति गणैः सादरं वीक्षमाणः
पुण्यं यायास्त्रिभुवनगुरोर्धाम चण्डीश्वरस्य ।
धूतोद्यानं कुवलयरजोगन्धिभिर्गन्धवत्या-
स्तोयक्रीडानिरतयुवतिस्नानतिक्तैर्मरुद्भिः ॥३६॥

३६. अपने स्वामी शिवजी दे नीले गले दी शोभा रखने आले तुसेंगी उन्दे गण बड़े मानै कन्ने दिखङन। तुस चंडीपति त्रलोकीनाथ दे धाम महाकाल गी जायो। जित्थूं दे बाग गन्धवती नदी दी बाऊ कन्ने झुलदे रैंदे न' जेड़ी कमलें दे पराग कन्ने ते मटयारें दे न्हौने आले बुटने आदि कन्नें कशबोदार हुंदी ऐ।

अप्यन्यस्मिञ्जलधर महाकालमासाद्य काले
स्थातव्यं ते नयनविषयं यावदत्येति भानुः ।
कुर्वन् संध्याबलिपटहतां शूलिनः श्लाघनीया-
मामन्द्राणां फलमविकलं लप्स्यसे गर्जितानाम् ॥३७॥

३७. हे डिग्गलजी, भायें कुसैलैवी महाकाल पुज्ज गेयो पर जिन्ना चिर सूर्ज भलेयां नई घरोई जा तुस उत्थें गै ठहरेयो। सब्बैलै शिवें दी आरती वेलै अपनी गम्भीर गर्जना कन्ने नगारे बजाने दा कम्म करियै अपनी गर्जना गी सफल करेयो ।

पादन्यासैः क्वणितरशनास्तत्र लीलावधूतैः
रत्नच्छायाखचितवलिभिश्चामरैः क्लांतहस्ताः ।
वेश्यास्त्वत्तो नखपदसुखान् प्राप्य वर्षाग्रबिन्दू-
नामोक्ष्यन्ते त्वचि मधुकरश्रेणिदीर्घान्कटाक्षान् ॥३८॥

३८. उत्थें मन्दरें च सञ्जा लै नचदे होई, लै कन्ने पैर टकांदे जिंदियां लक पइ दियां जंजीरी आलियां तड़ागियां छनकदियां न' ते हत्थें पेदे कड़े दे रत्नें दे लश्कारे कन्ने चमकदिएं डण्डियें आले पक्खे झोली २ हुट्टे दे हत्थें आलियां (नच्चने आलियां), अपने नैखरु लगे दे थारें उप्पर तुन्दियां पहलियां फुआ प्राप्त करियै त्रेडी नजरें कन्ने जेड़ियां भौंरे दी पंगतियां सेई ढुँदियां न' तुन्दे पासै दिखड्न ।

पश्चादुच्चैर्भुजतरुवनं मण्डलेनाभिलीनः
सांध्यं तेजः प्रतिनवजपापुष्परक्तं दधानः।
नृत्तारम्भे हर पशुपतेरार्द्रनागाजिनेच्छां
शांतोद्वेगस्मितनयनं दृष्टभक्तिर्भवान्या ॥३९॥

३९. पिछुआं शिवजी दी भुजाएं रूपी बनै उप्पर गोल २ रूप बनाइऐ जपा फुल्लें आङू लाल सिम्खर सञा दी लाली धारण करेओ। गजासुर दे मारने परैंत शिवें दी गजासुर दी गिल्ली २ खल्ल उप्पर लैने दी इच्छा पूरी करेओ। पार्वती होर शांत दृष्टि कन्ने तुन्दे भगती-भाव गी दिखङन।

गच्छन्तीनां रमणवसतिं योषितां तत्र नक्तं
रुद्धालोके नरपतिपथे सूचिभेद्यैस्तमोभिः।
सौदामिन्या कनकनिकषस्निग्धया दर्शयोर्वीं
तोयोत्सर्गस्तनितमुखरो मा च भूर्विक्लवास्ताः ॥४०॥

४०. उत्थें उज्जैनी च रातीं अपने प्रेमियें दे घरें गी जन्दियें मटियारें गी गाढ़े न्हेरे च रस्ता नई लब्बने उप्पर अपनी बिज्जै कन्ने जेड़ी कसवट्टी उप्पर सुन्ने दी लीकरा आङू हुन्दी ऐ रस्ता दस्सेयो। बरने कन्ने गर्जना नई करेओ। ओ वड़ियां डरौकल हुँदियां न'।

तां कस्यांचिद्भवनवलभौ सुप्तपारावतायां
नीत्वा रात्रिं चिरविलसनात्खिन्नविद्युत्कलत्रः ।
दृष्टे सूर्ये पुनरपि भवान्वाहयेदध्वशेषं
मन्दायन्ते न खलु सुहृदामभ्युपेतार्थं कृत्याः ॥४१॥

४१. ओ रात कुसै बरसाती उप्पर जित्थे कबूतर सुत्ते दे होङन, तुस पलै २ चमकने करी हुट्टी गेदी अपनी बिज्ज लाड़ी कन्ने कट्टी लैयो ते सूरज चढ़दे गै बाकी पैंडा तैं करी लैयो। इक बारी मित्तरै दा कम्म करने दा बीड़ा चुक्की लेया ते करियै गै छोड़ना, फी ढिल्ल-मट्ठ कनेई !

तस्मिन् काले नयनसलिलं योषितां खण्डितानां,
शांतिं नेयं प्रणयिभिरतो वर्त्म भानोस्त्यजाशु ।
प्रालेयास्त्रं कमलवदनात्सोऽपि हर्तुं नलिन्याः
प्रत्यावृत्तस्त्वयि कररुधि स्यादनल्पाभ्यसूयः ॥४२॥

४२. बड्डैलै खण्डिता नायकायें दे प्रेमी उन्दे अत्थ्रू पूँजदे न' ! इस करी तुस सूरजै दा रस्ता छोड़ी ओड़ेयो ! उसलै ओ बी सुन्दर कमलनी दे मुंहां परा त्रेल रूपी अथ्रू पूँजन परतोआ करदे होङन ते तुसेंगी अपनी किरणें दा रस्ता रोकदे दिक्खियै कुतै क्रोध नई चाढ़ी लैन।

गम्भीराया: पयसि सरितश्चेतसीव प्रसन्ने
छायात्माऽपि प्रकृतिसुभगो लप्स्यते ते प्रवेशम् ।
तस्मादस्या कुमुदविशदान्यर्हसि त्वं न धैर्या-
न्मोघीकर्तुं चटुलशफरोद्‌वर्तनप्रेक्षितानि ॥४३॥

४३. गम्भीरा नदी दे निर्मल पाणीं च तुन्दे शरीर ते तुन्दे परछावें दा, प्रवेश ते होग गै; जियां गम्भीरा नायिका दे प्रसन्न हिरदे च प्रेमी दा प्रवेश हुँदा ऐ।

अपनी गम्भीरता कन्ने (बडप्पन दी शान करिऐ) कुम्मियें आङू चिट्टयें शफरी मच्छियें दी खेडें गी ईयां गै नईं सुट्टी पायो। गम्भीर नायिका दी निर्मल त्रेडी चितवनें गी बुजुर्गी दी शानै च गै नईं सुट्टी पायो।

तस्या किंचित्करधृतमिव प्राप्तवानीरशाखं
हृत्वा नीलं सलिलवसनं मुक्तरोधो नितम्बम् ।
प्रस्थानं ते कथमपि सखे लम्बमानस्य भावि
ज्ञातास्वादो विवृतजघनां को विहातुं समर्थः ॥४४॥

४४. उस (गम्भीरा नदी) दे नीले पानिएं गी सीकी लैने करी पानी कण्डे थमां हेठ उठी जाग ते बैं दियां डालियां हांबी २ उसी छूङन। ईआं बझोंदा जे नीली साड़ी ढिलकने करी पट्ट नंगे होई गे न' ते बैं दी डालियें रूपी हत्थें कन्ने नदी उस ढिलकदी साड़ी गी सांभा करदी ऐ। ओदे पर ईआं लम्मे पौने करी तुन्दा उत्थुआं जाना कठन होई जाना ऐ।

जिनें अग्गें नन्द लैता दा होऐ, ओ प्रेमका दियां नंगियां जङां दिक्खिऐ ईआं गै कीयां छोड़ी सकदे न।

त्वन्निष्यन्दोच्छ्वसितवसुधागन्धसम्पर्करम्य:
स्रोतोरन्ध्रध्वनितसुभगं दन्तिभिः पीयमान: ।
नीचैर्वास्यत्युपजिगमिषोर्देवपूर्वं गिरिं ते
शीतो वायु: परिणमयिता काननोदुम्बराणाम् ।।४५।।

४५. तुन्दी फुहारें करी धरती सुखै दा साह लैन्दी ऐ ! उस सगन्धी दे सम्पर्क करी वायु सगन्धी आली ऐ, हाथी बड़े नन्दै कन्ने उस (वायु) गी पीन्दे न । उस पीने करी उ'दियें सुण्डें दियें नासें चा बड़ी छैल धुनि निकलदी ऐ । जंगली फकोड़े च रस भरोचग ते ओ पक्की जाङन । नेई शीतल बा देवगिरि पर्वतै गी जाने दी मर्जी आले तुसेंगी हेठा दा बल्लें २ सहारा दिन्दो बगदी जाग ।

तत्र स्कन्दं नियतवसतिं पुष्पमेघीकृतात्मा
पुष्पासारैः स्नपयतु भवान्व्योमगङ्गाजलार्द्रैः ।
रक्षाहेतोर्नवशशिभृता वासवीनां चमूना-
मत्यादित्यं हुतवहमुखे सम्भृतं तद्धि तेजः ।।४६।।

४६. फुल्ल बराने आले बदलै दा रूप धारण करियै ते गासै दी गङ्गाजी दे पानियें कन्ने त्रौङ्का दइऐ, तुस देवगिरि उत्पर गै सदा बास करने आले स्वामी कार्तिक हौरें गी फुल्लें दी बरखा कन्ने स्नान करायो ! देवतें दी सेना दी रक्षा गीतै दुतिया दे चन्द्रमा गी धारण करने आले शिवें, सूरज थमां बी प्रचण्ड अपने बलै (वीर्य) गी अग्नि दे मुखै च पाया हा । ए ऊऐ तेजपुञ्ज स्वामी कार्तिक ऐ ।

ज्योतिर्लेखावलयि गलितं यस्य बर्हं भवानी
पुत्रप्रेम्णा कुवलयदलप्रापि कर्णे करोति ।
धौतापाङ्गं हरशशिरुचा पावकेस्तं मयूरं
पश्चादादिग्रहणगुरुभिर्गर्जितैर्नर्तयेथाः ॥४७॥

४७. चान्नैं आले डिग्गे दे जेहदे फंगै गी अपने पुत्तर कार्तिक दा मोर जान्नी करी पार्वती जी कमल फुल्लै दी थां अपने कन्ने च लांदियां न' ते जेदियां चितवनां शिवें दे मत्थे दी चाननी कन्ने होर चिट्टियां होई गई दियां न' उस स्वामी कार्तिक दे मोर गी अपनी गरजना कन्नै, जेड़ी पहाड़ी गुफें इच गूँज़ने करी होर गम्भीर होई गेदी ऐ, खूब नचायो ।

आराध्यैनं शरवणभवं देवमुल्लंघिताध्वा
सिद्धद्वन्द्वैर्जलकणभयाद्वीणिभिमुक्तमार्गः ।
व्यालंबेथाः सुरभितनयालंभजां मानयिष्य-
न्स्रोतोमूर्त्या भुवि परिणतां रन्तिदेवस्य कीर्तिम् ॥४८॥

४८. जिसलै स्वामी कार्तिक गी—जेड़े शरबन इच पैदा होए हे—पूजिऐ तुस अग्गे बदगेयो तां पानी दियां फुंङा पइये सिज्जी जाने डरा कन्नै वीणा बजाने आले सिद्ध, गन्धर्व लोक तुन्दे रस्ते चा बक्खी होई जाङन। राजा रन्तिदेव दी कीर्ति चम्बल नदी दा मान करने गीतै तुस किश चिर इत्थें रुकयो। राजा रन्दिदेव दी कीर्ति गै गोमेध यज्ञ करने करी चम्बल नदी दे रूपै इच बगी ही ।

त्वय्यादातुं जलमवनते शाङ्गिणो वर्णचौरे
तस्याः सिन्धोः पृथुमपि तनुं दूरभावात्प्रवाहम् ।
प्रेक्षिष्यन्ते गगनगतयो नूनमावर्ज्य दृष्टी-
रेकं मुक्तागुणमिव भुवः स्थूलमध्येन्द्रनीलम् ॥४९॥

४६. श्री कृष्णजी दा रंग चुराने आले श्यामवर्ण तुस, जिसलै पानी लैने गित्ते चम्बल नदी उप्पर नींदे होगेओ, तां गासैं फिरने आले गन्धर्व सिद्धें गी, ओ नदी—भायें बड़ी बड्डी ऐ—पतली नई लब्बग। ईयां बझोग जियां पृथ्वी नै मोतियें दी माला 'च बश्कार इक बड्डा नीला मनका पायेदा होऐ।

———

तामुत्तीर्य व्रज परिचितभ्रूलताविभ्रमाणां
पक्ष्मोत्क्षेपादुपरिविलसत्कृष्णशारप्रभाणाम् ।
कुन्दक्षेपानुगमधुकर श्रीमुषामात्मबिम्बं
पात्रीकुर्वन्दशपुरवधूनेत्रकौतूहलानाम् ॥५०॥

५०. उस चम्बल नदी गी टप्पिऐ तुस अग्गें बधेयो। ते दशपुर दी मटयारें गीते दिक्खने जोग बनी जायो। उन्दी अक्खीं गिते कौतूहल बनी जायो। ओ मटयारां भरमें दी चैंचल खेडें च बड़ियां चतर न। जिसलै ओ अपनी पलकें गी उप्पर चुकदियां न तां उन्दी अक्खी दी काली ते चिट्टी रंगत अजब गै शोभा दिन्दी ऐ। अक्खीं दी चिट्टी मिलका दे पिछूँ काली कतार किश ईयां लब्दी ऐ जियां छण्डे दे चमेली दे फुलें पिछें भौरें दी पंक्ताल जा करदी होऐ।

———

ब्रह्मावर्तं जनपदमथच्छायया गाहमानः
क्षेत्रं क्षत्रप्रधनपिशुनं कौरवं तद्भजेथाः ।
राजन्यानां शिरसि शरशतैर्यत्र गाण्डीवधन्वा
धारापातैस्त्वमिव कमलान्यभ्यवर्षन्मुखानि ।।५१।।

५१. तां अपनी छायें २ ब्रह्मावर्त लाकै गी पार करियै तुस कौरवें दे लाके कुरुक्षेत्र दुरी जायो। ए थां क्षत्रियें दे भारे युद्धै दा चेता कराने आला ऐ। इत्थें गाण्डीव धनुषधारी अर्जुनै क्षत्रियें दे सिरें उप्पर तीरें दी बरखा करियै ऊऐ हालत करी ओड़ी ही, जेड़ी जोरै आली बाछड़ें कन्ने तुस कपलें दी करी ओड़देओ।

हित्वा हालामभिमतरसां रेवतीलोचनाङ्कां
बन्धुप्रीत्या समरविमुखो लाङ्गली याः सिषेवे।
कृत्वा तासामधिगमपां सौम्य सारस्वतीना-
मन्त शुद्धस्त्वमपि भविता वर्णमात्रेण कृष्णः ।।५२।।

५२. अति प्यारी लगने आली, ते अपनी प्यारी पत्नी रेवती दे नैनें दा परशावां जेदे विच्च पौंदा हा, उस मदिरा गी छोड़िऐ ते साकें रिश्तेदारें दे मोह करिऐ, युद्ध थमां परतोइऐ जित्थे हलधारी बलराम जाई रए हे। उस सरस्वती नदी दा जल पान करिऐ, बदलजी ! तुन्दा अन्तःकरण शुद्ध होई जाग ते तुस शड़े बाहरा दा गै सौले रई जागेओ ।

तस्माद्गच्छेरनुकनखलं शैलराजावतीर्णां
जह्नोः कन्यां सगरतनयस्वर्गसोपानपङ्क्तिम् ।
गौरीवक्त्रभ्रुकुटिरचनां या विहस्येव फेनैः
शंभोः केशग्रहणमकरोदिन्दुलग्नोर्मिहस्ता ॥५३॥

५३. इत्थुआं, कुरुक्षेत्रा दा कनखलै कोल सदानी लाके च औंदी जाह्नवी (गंगाजी) कोल जायो जेड़ी सगर दे सट्ठ हज़ार पुत्रें गीतै सुर्गै दी पव्वाग बनी गई ही । जिस गंगा नै पार्वती दी क्रैंखी गी दिक्खिऐ अपनी झग्गा कन्ने हस्सी ओड़ेया हा, ते अपने लैंहरें रूपी हत्थें कन्ने चन्द्रमा समेत शिवें दे केसेंगी घोटियें फड़ा लैता हा ।

तस्याः पातुं सुरगज इव व्योम्नि पश्चार्धलम्बी
त्वं चेदच्छस्फटिकविशदं तर्कयेस्तिर्यगम्भः ।
संसर्पन्त्या सपदि भवतः स्रोतसिच्छाययाऽसौ
स्यादस्थानोपगतयमुनासंगमेवाभिरामा ॥५४॥

५४. जेकर गंगाजी दे स्वच्छ ते बलौर आंङू निर्मल पानी पीने दा बचार होऐ तां पिछले हिस्से दा लमकदे होई ऐरावत आङू अग्गे झुकियै ते त्रेडा होइऐ पी लैयो ।

गंगा इच पौन्दा तुन्दा पड़शावां ईयां शैल लब्बग आखो जे गंगाजी दा जमना जी कन्ने प्रयाग तीर्थ गी छोड़ियै कुतै होर थां मेल होई गेया ऐ ।

आसीनानां सुरभितशिलं नाभिगन्धैर्मृगाणां
तस्या एव प्रभवमचलं प्राप्य गौरं तुषारैः ।
वक्ष्यस्वध्वश्रमविनयने तस्य शृंगे निषण्णः
शोभां शुभ्रां त्रिनयनवृषोत्खातपङ्कोपमेयाम् ।।५५।।

५५. गंगाजी दे स्रोत ते बर्फू कन्ने चिट्टे दुद्ध होए दे पर्वतै उप्पर पुज्जियै, जित्थों दियां सिलां कस्तूरी आले हिरणें दी कस्तूरी आली सगन्धी कन्ने सगन्धत रौंदियां न। उस पर्वतै दी चोटी उप्पर रस्ते दा हुट्टन तुआरन बैठे दे तुस, ईंया लब्बगेओ जियां शिवें दे नन्दी गणै सिङे मिट्टी लाई दी होऐ।

तं चेद्वायौ सरतिसरलस्कन्धसंघट्टजन्मा
बाधेतोल्काक्षपितचमरीबालभारो दवाग्निः ।
अर्हस्येनं शमयितुमलं वारिधारासहस्रै-
रापन्नार्तिप्रशमनफलाः सम्पदोह्युत्तमानाम् ।।५६।।

५६. बा चलने उप्पर देवदार दी शाखें दी रगड़ै बिच्चा पैदा होई दी डवै दी चिंग्याड़ियें कन्ने --जंगली गौ चमरीदी वालें दे गुच्छें आली पूछलै गी जेड़ी साड़ी ओड़दो ऐ, जेकर पर्वतै गी--अग्ग लग्गी दी होऐ तां अपनियें अनगिनत बाछड़े कन्ने उत्थें बरिऐ, ओ अग्ग साहली ओड़ेयो।

चंगे मनुक्खें दा धन दुखियें दा दुख दूर करने कन्ने गै सफल हुँदा ऐ ।

ये संरम्भोत्पतनरभसाः स्वाङ्गभङ्गाय तस्मि-
न्मुक्ताध्वानं सपदि शरभा लङ्घयेयुर्भवन्तम् ।
तान्कुर्वीथास्तुमुलकरकावृष्टिपातावकीर्णा -
न्के वा न स्युः परिभवपदं निष्फलारम्भयत्नाः ।।५७।।

५७. उन्हें शरभें गी, जेड़े रोहै कन्ने कुद्दी-कुद्दियै तुन्दे उप्पर हमला करङन ते अपना रस्ता छोड़िऐ करस्ते चलिऐ अपने हड्ड भन्नी लैङन, उनेंगी ऐनूं दे बड्डे २ गोले मारिये नसाई देओ ।

जेड़े फजूल गै कम्म शुरू करी दिन्दे न, ओ तिरस्कारै जोग गै हुँदे न ।

———

त्वां मुक्तध्वनिमसहनाः स्वांगभंगाय तस्मिन्
दर्पोत्सेकादुपरि शरभा लंघयेयुरलंघ्यम् ।
तान् कुर्वीयास्तुमुलकरकावृष्टिहासावकीर्णान्
के वा न स्युः परिभवपदं निष्फलारम्भयत्नाः ।।५८।।

५८. दूएं गी दिक्खी नई सखाने आले ते अपने 'च गै आकड़े दे शरभ जेकर चुपचाप जन्दे तुंदे उप्पर हमला करी देन (तुन्दे उप्पर हमला कैसी करना ? तुस कोई हमले जोग थाड़े ओ) तां ऐनूं दे गोलें दी बरखा रूपी हासें कन्ने उनेंगी खिण्ड मिण्ड करी ओड़ेओ ।

———

तत्र व्यक्तं दृषदि चरणन्यासमर्धेन्दुमौलेः
शश्वत्सिद्धैरुपचितबलिं भक्तिनम्रः परीयाः ।
यस्मिन्दृष्टे करणविगमादूर्ध्वमुद्धूतपापाः
कल्पिष्यन्ते स्थिरगणपदप्राप्तये श्रद्दधानाः ॥५९॥

६०. उत्थें शिला उप्पर साफ २ लब्बने आले शिवें दे चरणें दे नशान गी भगती ते श्रद्धा कन्ने नम्र होइऐ पूजा करयो ते पर्दक्खना लैयो। सिद्ध योगी लोक नाढ़ी सदा पूजा करदे रौंदे न। एदे दर्शन करने करी पाप मुक्त होइऐ श्रद्धालु लोक मरने परैन्त शिवें दे गणें दी म्हेशां आस्ते पदवी हासल करने जोग होई जन्दे न।

————

शब्दायन्ते मधुरमनिलैः कीचकाः पूर्यमाणाः
संरक्ताभिस्त्रपुरविजयो गीयते किन्नरीभिः ।
निर्ह्रादस्ते मुरज इव चेत्कन्दरेषु ध्वनिः स्या-
त्संगीतार्थो ननु पशुपतेस्तत्र भावी समग्रः ॥६०॥

६१. बाऊ कन्ने भरोचे दे वैंह मिट्ठी धुन कडङन। किन्नरें दियां लाड़ियां शिवें दी त्रिपुरासुर उप्पर विजय दे गीत गाङन। ते जेकर गुफें च तुन्दी गर्जन मृदङ्गै दी थाप होई जा, तां शिवें दी पूजा दा सारा सम्यान गै किट्ठा होई गेया समझो।

————

प्रालेयाद्रे रुपतटमतिक्रम्य तांस्तान्विशेषा-
न्हंसद्वारं भृगुपतियशोवर्त्म यत्क्रौंचरन्ध्रम् ।
तेनोदीचीं दिशमनुसरेस्तिर्यगायामशोभी
श्यामः पादो बलिनियमनाभ्युद्यतस्येव विष्णोः ।।६१।।

६२. हिमालय पर्वतै दी ढलाइयें दे कोल २ दिक्खने जोग नजारें गी दिक्खियै परसराम हुँदे द्वारा बनाये दे, उंदा जस बधाने आले क्रौंचरन्ध्र नां दे दरवाजे आले पासै जित्थुआं मानसरोवरै गी जाने आले राजहंस लँघदे न, तुस लम्मा अकार बनाइऐ पहाड़ै आली वक्खी होई जायो। तुस इयां शैल लब्गेयो जियां बलि राजा गी दबाने गित्तै विष्णु भगवान हुँदा काला चरण बधेया हा ।

गत्वा चोर्ध्वं दशमुखभुजोच्छ्वासितप्रस्थसन्धेः
कैलासस्य त्रिदशवनितादर्पणस्यातिथिः स्याः ।
श्रृंगोच्छ्रायैः कुमुदविशदैर्यो वितत्य स्थितः खं
राशिभूतः प्रतिदिनमिव त्र्यंबकस्याट्टहासः ।।६२।।

६२. उप्पर जाइयै तुस कैलाश पर्वतै दे परौहने बनेओ, जेदे जोड़ २ रावणै अपनी भुजायें कन्ने हलाई ते ठोली दित्ते हे, ते जेड़ा देवतें दियें लाड़ियें गित्ते मुंह दिक्खनें दा शीशा बनी गेदा ऐ, ते जेड़ा चिट्टे कमलें आङू सफेद बर्फानी उच्ची चोटियें कन्ने गासै इच फैलिऐ ईयां खड़ोता दा ऐ, आखो जे शिवें दा गड़ाका सारा इक्कै थार किट्ठा होइऐ जम्मी गेदा होऐ ।

उत्पश्यामि त्वयि तटगते स्निग्धभिन्नाञ्जनाभे
सद्यः कृत्तद्विरददशनच्छेदगौरस्य तस्य ।
शोभामद्रेः स्तिमितनयनप्रेक्षणीयां भवित्री-
मंसन्यस्ते सति हलभृतो मेचके वाससीव ।।६३।।

६३. पहिले ते चीकने सुरमें आङ्‌ रंगत आले तुस जिसलै कैलाश पर्वतै दी ढलान उप्पर पुजगे तां ताजे २ कटोए दे हाथी- दन्दै आङ्‌ तुन्दी शोभा, अऊँ सोचना, ईयां बझोग जियां बलराम होरें काला वस्तर अपने मूण्डै रखेदा होऐ ।

हित्वा तस्मिन्भुजगवलयं शंभुना दत्तहस्ता
क्रीडाशैले यदि च विचरेत्पादचारेण गौरी ।
भङ्गीभक्त्या विरचितवपुः स्तम्भितान्तर्जलौघः
सोपानत्वं कुरु मणितटारोहणायाग्रयायी ।।६४।।

६४. उस क्रीड़ा- पर्वतै उप्पर जेकर पार्वती होर सप्पै दा कंगन तुआरिऐ ते शिवें दे हत्थें इच हत्थ पाइऐ सैल करन तां उस थमां पहले तुस अपना अन्दरला पानी ठोस बनाइ लैयो तां जे उन्दे चढ़ने गित्तै मणियें दी ढलानै उप्पर तुन्दियां पैड़ियां बनदियां जान ।

तत्रावश्यं वलयकुलिशोद्घट्टनोद्गीर्णतोयं
नेष्यन्ति त्वां सुरयुवतयो यन्त्रधारागृहत्वम् ।
ताभ्यो मोक्षस्तव यदि सखे घर्मलब्धस्य न स्या-
त्क्रीडालोलाः श्रवणपरुषैर्गर्जितैर्भाययेस्ताः ॥६५॥

६५. उत्थें देवतें दियां लाड़ियां अपने कंङने दे किंगरें दियें ठोकरें कन्ने बरखा बरांदे तुसेंगी फुआरा बनाई ओड़ङन। गरमी इच मसां २ लब्वे दे तुसेंगी जे कर ओ नई गै छोड़न तां उने खेडा लग्गी दियेंगी कन्ने गी कठोर लगने आली गर्जन कन्ने डराओ।

हेमांभोजप्रसविसलिलं मानसस्याददानः
कुर्वन् कामं क्षणमुखपटप्रीतिमैरावतस्य ।
धुन्वन्कल्पद्रुमकिसलयान्यंशुकानि स्ववातै-
र्नानाचेष्टैर्जलद ललितैर्निर्विशेस्त नगेन्द्रम् ॥६६॥

६६. सनहरे कमले गी पैदा करने आले मानसरोवरै दा पानी पीन्दे होई, ऐरावत हाथी गी दनाभर मुँह खट्टने दा नन्द दिन्दे, ते कल्पवृक्ष दे नमें कुंगले पत्रें (आखो जे म्हीन बस्तर होऐ) गी हलान्दे भांति २ दियें खेडें कन्ने उस पर्वतें दे राजे कैलाश पर्वतै दा नन्द लुट्टेयो।

तस्योत्सङ्गे प्रणयिन इव स्रस्तगङ्गादुकूलां
न त्वं दृष्ट्वा न पुनरलकां ज्ञास्यसे कामचारिन् ।
या वः काले वहति सलिलोद्गारमुच्चैर्विमाना
मुक्ताजालग्रथितमलकं कामिनीवाभ्रवृन्दम् ।।६७।।

६६. हे मनमौजी बदल जी ! जियां कोई मटयार जेदी गंगाजी आङू चिट्टी रेशमी साड़ी ढिलकी गई होऐ—अपने पति दी गोदै च बेठी दी होए—ऊंआ गै कैलाश पर्वतै दी गोदै च अलका नगरी गी दिक्खियै जेंदी चिट्टी साढ़ी आङू गंगा बगा दी है, तुस पंछानी नई लैगेओ ! उच्ची अमारतें आली अलका, बरसाती फुहारां बराह्न्दे बदलें गी ईयां धारण करदी ऐ जियां मान- क्रोध छोड़ियै प्रेमका अपने बालेंगी मोतियें दियें झालरें कन्नै सजांदी ऐ ।

ॐ उत्तरमेघः ॐ

[मेघदूतम्]

विद्युत्वन्तं ललितवनिताः सेन्द्रचापं सचित्राः
संगीताय प्रहतमुरजाः स्निग्धगम्भीरघोषम् ।
अन्तस्तोयं मणिमयभुवस्तुङ्गमभ्रंलिहाग्राः
प्रासादास्त्वां तुलयितुमलं यत्र तैस्तैर्विशेषैः ॥१॥

१. नगरी (अलकापुरी) दियां अमारतां खास गल्लें च तुन्दा मकाबला करने जोग न। तुन्दे कोल मिलकने आली बिज्ज ऐ ते इने अमारतें इच सुन्दर मटियारां न। तुन्दे कोल सतरंगी पींग ऐ ते इत्थे कई रंगे दियां तस्वीरां न। तुस गम्भीर मधुर ध्वनि करदे ओ ते इत्थे संगीत गित्तै मृदंग बजदे न। तुन्दे अंदर पानी ऐ ते इन्दे फर्श सब्जें कन्नै जड़े दे न (जेड़े पानी दी झलक दिन्दे न) तुस गासै गी छून्दे ओ तां इन्दियां छतां बी गासै गी हामदियां न।

———·——

हस्ते लीलाकमलमलके बालकुन्दानुविद्धं
नीता लोध्रप्रसवरजसा पाण्डुतामानने श्रीः ।
चूड़ापाशे नवकुरबकं चारु कर्णे शिरीषं
सीमन्ते च त्वदुपगमजं यत्र नीपं वधूनाम् ॥२॥

२. जित्थें (शरद् ऋतु इच) मटियारें दे हत्थें इच खेडने गितै कमल हुँदे न, (हेमन्त ऋतु इच) वालें कन्ने सजरे कुँद फुल्ल गुँदे दे हुँदे न, (शिशिर ऋतु इच) मुँहै उप्पर लोध्र फल्लें दी धूड़ें दा पौडर लाएदा हुँदा ऐ, ते ओदे कन्ने बड़ा गुआड़ हुँदा ऐ, (बसन्त ऋतु इच) जूड़े इच ताजे कुरबक फुल्ल लाये हुँदे न, (गरमी इच) कन्नें इच सुन्दर सिरीं दे फुल्ल टँगे दे हुँदे न ते (बरसातीं) चीरें इच तन्दे औने उप्पर खिड़ने आला कदम्बै दा फुल्ल लाए दा हुँदा ऐ ।

———

यत्रोन्मत्तभ्रमरमुखराः पादपा नित्यपुष्पा
हंसश्रेणीरचितरशना नित्यपद्मा नलिन्यः ।
केकोत्कण्ठा भवनशिखिनो नित्यभास्वत्कलापा
नित्यज्योत्स्नाः प्रतिहततमोवृत्तिरम्याः प्रदोषाः ॥३॥

३. जित्थे बूटें पर सदा फुल्ल खिड़े दे रौंदे न ते मस्त भौंरें गूँजदे रौंदे न । जित्थे कमल बेलें गी सदा कमल पेदे रौंदे न, हँसे दियां पङ्तियां चवक्खी लग्गी रौंदियां न, जियां कमरबन्द लाए दा होऐ । जित्थे चमकदार फङे आले पालतू मोर उबड़ी मुण्डी करिऐ हर बेलैं कूकदे रौंदे न । ते जित्थूँ दियां रातां—चान्ननियां ते न्हेरियां नई होने करी—बड़ियां शैल हुँदियां न ।

———

आनन्दोत्थं नयनसलिलं यत्र नार्न्यैर्निमित्तै-
र्नान्यस्तापः कुसुमशरजादिष्टसंयोगसाध्यात् ।
नाप्यन्यस्मात्प्रणयकलहाद्विप्रयोगोपपत्ति-
र्वित्तेशानां न च खलु वयो यौवनादन्यदस्ति ।।४।।

४. जित्थें यक्षें दी अक्खीं दे अत्थरू ते किरदे न, पर ओ सदा खुशी दे कारण किरदे न। जित्थे ताप ते हुँदा ऐ, पर ओ शड़ा कामदेव दे बाण लगने करी हुँदा ऐ ते झट प्रेमी या प्रेमिका दे मिलने करी चुकी वी जन्दा ऐ। जित्थे वजोग ते हुंदा ऐ, पर ओ निरा कामदेवते दी खेडै दे रोसे करी हुंदा ऐ होर कुसे हेतै कन्ने नई हुँदा ऐ ते जित्थे जुआनी कशा बक्खरी कोई होर अवस्था नहीं हुँदी।

यस्यां यक्षा सितमणिमयान्येत्य हर्म्यस्थलानि
ज्योतिश्छायाकुसुमरचितान्युत्तमस्त्रीसहायाः ।
आसेवन्ते मधु रतिफलं कल्पवृक्षप्रसूतं
त्वद्गम्भीरध्वनिषु शनकैः पुष्करेष्वाहतेषु ।।५।।

५. जित्थे यक्षलोक सुन्दर मटियारें कन्ने, चिट्टी मणियें आले ते बलौरें दे बने दे महलें च जाइये—जिन्दे बिच तारें दे लश्कारे पौंदे ते ईयां बझोंदा जे फुल्ल खिड़े दे होन! ते बल्लें-बल्लें गम्भीर धुनै कन्ने बजदे मृदङ्ग, जेड़े तुँदी गर्जन आङू गम्भीर हुँदे न—कल्पवृक्ष थमां निकली दी 'रतिफल' ना दी मदिरा पींदे न।

—⊛⊛—

मन्दाकिन्याः सलिलशिशिरैः सेव्यमाना मरुद्भि-
र्मन्दाराणामनुतटरुहां छायया वारितोष्णाः ।
अन्वेष्टव्यैः कनकसिकतामुष्टिनिक्षेपगूढैः
संक्रीडन्ते मणिभिरमरप्राथिता यत्र कन्याः ॥६॥

६. जित्थे (यक्षें दियां) कुड़ियां, सनहरी रेतू च मुट्ठियां भरियै रतन छपैलदियां ते तुपदियां ते ऐ खेड खेडदियां न। गङ्गाजी दी शीतल बा जिंदी सेवा करदी, कण्डै जम्मे दे मंदार बृक्षें दी छावां कन्ने जिनेंगी गरमी नईं लगदो ते जिनेंगे देवते बी ब्याह आस्तै बेनती करदे न। (नेइयां ओ यक्षें दियां कुड़ियां) न।

नीवीबन्धोच्छ्वसितशिथिलं यत्र बिम्बाधराणां
क्षौमं रागादनिभृतकरेष्वाक्षिपत्सु प्रियेषु ।
अर्चिस्तुङ्गानभिमुखमपि प्राप्य रत्नप्रदीपान्
ह्रीमूढानां भवति विफलप्रेरणा चूर्णमुष्टिः ॥७॥

७. जित्थे चंचल हत्थें आले पति काम वस होइयै गण्ढ खोलने करी ढिलकी दी रेशमी साड़ी गी खिचदे ते तुआरदे न। तां सुन्दर लाल ओठें आलियां, शरमै कन्ने भलखोई दियां सुंदरियां पौडरे दी मुट्ठी भरियै उबड़ी जँदी किरणें आले रत्नदीपें उप्पर फजूल गै सुटदियां न (मणियें दे दिये पौडर सुट्टने करी थोढ़े बुझदे न।)

नेत्रा नीताः सततगतिना यद्विमानाग्रभूमी-
रालेख्यानां सलिलकणिकादोषमुत्पाद्य सद्यः ।
शंकास्पृष्टा इव जलमुचस्त्वादृशा जालमार्गैः
धूमोद्गारानुकृतिनिपुणा जर्जरा निष्पतन्ति ।।८।।

८. जित्थे तुंदे नेए बदल, जिनेंगी बा सहारा दइऐ सतमंजले झरोखें तोड़ी लइ जँदी ऐ, अपनी फुहें कन्ने कधें लीकी दियां मूरतां खराब करी ओड़ने दे डरै मूजब दुआरियें दिएँ जालियें चा निकलिऐ नस्सी जन्दे न, तुस फुहें च बँडोइऐ ते धूँ बनिऐ निकली जाने दी कला च बड़े चतर होए !

यत्र स्त्रीणां प्रियतमभुजोच्छ्वासितालिङ्गितानां-
मङ्गग्लानिं सुरतजनितां तन्तुजालावलम्बाः ।
त्वत्संरोधापगमविशदश्चन्द्रपादैर्निशीथे
व्यालुम्पन्ति स्फुटजललवस्यन्दिनश्चन्द्रकांताः ।।९।।

९. जित्थे अद्धी रातीं (अलकापुरी च) तुन्दी रुकावट हटी जाने कारण चन्नै दिया निर्मल किरणां, झालरें आङूलमकी दियें चन्द्रकांत मणियें थमां तोपे बरांदियां न ते भोग थमां पैदा होए दा स्त्रियें दा हुट्टन हटांदियां न, जिनेंगी प्रेमियें दियां बज्जी दियां जप्फियां ढिल्लियां होई गेदियां न ।

———

अक्षय्यान्तर्भवननिधयः प्रत्यहं रक्तकण्ठै-
रुद्गायद्भिर्धनपतियशः किन्नरै यत्र सार्धम् ।
वैभ्राजाख्यं विबुधवनिता वारमुख्या सहाया
बद्धालापा बहिरुपवनं कामिनो निर्विशन्ति ॥१०॥

१०. जित्थे प्रेमी लोक—जिंदे घरें खजाने न—अप्सरा रूपी वेस्यायें कन्ने जाइऐ गल्लां करदे न। उच्चे सुरें धनपति कुबेरै दा जस गांदे किन्नरें कन्ने "वैभ्राज' नां दे बाहरलें बागें दा नन्द लैंदे न।

———

गत्युत्कम्पादलकपतितैर्यत्र मन्दारपुष्पैः
पत्रच्छेदैः कनककमलैः कर्णविभ्रंशिभिश्च ।
मुक्ताजालैः स्तनपरिसरच्छिन्नसूत्रैश्च हारै-
र्नैशो मार्गः सवितुरुदये सूच्यते कामिनीनाम् ॥११॥

११. जित्थे अभिसार करने आलियें मटयारें दा रातीं आला रस्ता—सूरज निकलने परैंत तौली टोरै कारण हिलने करी बालें चा झड़े दे मन्दार पुष्पें करी, लता बेलें दे टोटें करी, कन्ने थमां झड़े दे सनहरी कमलें करी, मोतियें दी लड़ियें करी, स्तनें उप्पर डोरी कन्ने परोये दे फुल्लें दे हारें दे त्रुट्टने करी—सेई होई जँदा ऐ।

———

वासश्चित्रं मधु नयनयोर्विभ्रमादेशदक्षं
पुष्पोद्भेदं सह किसलयैर्भूषणानां विकल्पान् ।
लाक्षारागं चरणकमलन्यासयोग्यं च यस्या-
मेकः सूते सकलमबलामण्डनं कल्पवृक्षः ॥१२॥

१२. जित्थे इकला कल्पवृक्ष गै रंग बिरंगे टल्ले, अक्खीं गी जाचां दस्सने आली चतुर शराब, कुड्गले पत्तरें समेत खिड़े दे फुल्ल, होर २ कई प्रकार दे गहने बंदे ते कमलें नेए कोमल पैरें गित्तै मैंहदी आदि इस्त्रिएँ दी सारी शिङार समग्री दई ओड़दा ऐ।

———

पत्रश्यामा दिनकरहयस्पर्धिनो यत्र वाहाः
शैलोदग्राःस्त्वमिव करिणो वृष्टिमन्तः प्रभेदात् ।
योधाग्रण्यः प्रतिदशमुखं संयुगे तस्थिवांसः
प्रत्यादिष्टाभरणरुचयश्चन्द्रहासव्रणाङ्कैः ॥१३॥

१२. जित्थे घोड़े पत्रें आंङू घने नीले न ते सूरजै दे घोड़ें दी बरोबरी करदे न। पहाड़ै जेडे हाथी जिंदे मत्थे दा मद चौंदा ऐ, जिआं तुस बरखा बरांदेओ। अव्वल नम्बर दे जोधे न, जिनें लड़ाई इच रावण दा मुकाबला कीता ते जिंदे शरीरें उप्पर लड़ाई दे जखमें दे नशान गहने बंदें दी शानू गी पिछड़ा सुटदे न।

———

मत्वा देवं धनपतिसखं यत्र साक्षाद्वसन्तं
प्रायश्चायं न वहति भयान्मन्मथः षट्पदज्याम् ।
सभ्रू भङ्गप्रहितनयनैः कामिलक्ष्येष्वमोघै-
स्तस्यारम्भश्चतुरवनिताविभ्रमैरेव सिद्धः ॥१४॥

१४. जित्थे कामदेव कुबेर हुन्दे मित्तर शंकर महादेव गी साक्षात् रौन्दे जानदा ऐ ते डरै मारै भौंरें दी डोरीआली कमान नई पगड़दा। ओदा कम्म त्रेडी भरमें आली चतर नारिएँ दियां चितवनां कामी लोकें रूपी नशाने उप्पर पक लगदियां न।

———

तत्रागारं धनपतिगृहादुत्तरेणास्मदीयं
दूराल्लक्ष्यं सुरपतिधनुश्चारुणा तोरणेन ।
यस्योपान्ते कृतकतनयः कांतया वर्धितो मे
हस्तप्राप्यस्तबकनमितो बालमन्दारवृक्षः ॥१५॥

१५. उत्थे राजा कुबेर हुँदे महला थमां दना उप्पर साढ़ा घर ऐ। ओदा सतरंगी पीङ्गा आङू तोरण दूरा गै लब्बी जँदा ऐ। ओदे कच्छ गै मेरी पत्नी ने इक मुतबन्ने आङू प्यारा मन्दार वृक्ष लाये दा ऐ। जेड़ा फुल्लें दे कन्ने नींदा रौंदा ऐ ते उसी ते तौले गे हत्थ पुज्जी जन्दा ऐ।

———

वापी चास्मिन्मरकतशिलाबद्धसोपानमार्गा-
हैमैश्छन्ना विकचकमलैः स्निग्धवैदूर्यनालैः ।
यस्यास्तोये कृतवसतयो मानसं सन्निकृष्टं
नाध्यास्यन्ति व्यपगतशुचस्त्वामपि प्रेक्ष्य हंसा ॥१६॥

१६. साड़ै घर पन्ने जड़ी दियें सिलें दी पौड़ियें आली इक बौली ऐ खिड़े दे सनहरी कमल ते वैदूर्य मणियें आंङू कमल नाल न । जित्थे नन्दै कन्ने रौहने आले हंस मानसरोवर कच्छ हुँदे होए बी, ते तुसेंगी दिक्खियै बी तुआंई जाने दी हीखी नई करदे ।

———

तस्यास्तीरे रचितशिखरः पेशलैरिन्द्रनीलैः
क्रीड़ाशैलः कनककदलीवेष्टनप्रेक्षणीयः ।
मद्गेहिन्याः प्रिय इति सखे चेतसा कातरेण
प्रेक्ष्योपान्तस्फुरिततडितं त्वां तमेव स्मरामि ॥१७॥

१७. उस बौली दे कण्डै, नीलमें दे किंगरें आला—चबक्खीं सनहरी केले दे बूटें दी बाड़ कन्ने जेड़ा बड़ा स्नॉकड़ा ऐ—इक क्रीड़ा-पर्वत ऐ। ओ पर्वत मेरी पत्नी गी बड़ा प्यारा ऐ ते बिजली कन्ने चमकदे कनारें आले तुसेंगी दिक्खिऐ मिकी उस पर्वतै दा गै चेता आई गेया ऐ ।

———

रक्ताशोकश्चलकिसलयः केसरश्चात्र कांतः
प्रत्यासन्नौ कुरबकवृतेर्माधवी- मण्डपस्य ।
एकः सख्यास्तव सह मया वामपादाभिलाषी
काङ्क्षत्यन्यो वदनमदिरां दोहदच्छद्मनास्याः ।।१८।।

१८. इस पहाड़ै उप्पर (क्रीड़ा पर्वतै उप्पर) कुरबकें दी बाड़ ते माधवी लता दे कोल हिलदे पत्रें आला लाल अशोक ते सुन्दर बकुल वृक्ष न। मेरे सने इक (अशोक वृक्ष) ते तेरी सखी (मेरी लाड़ी) दे खब्बे पैरै दी ठोकरै दा लोड़मंद ऐ ते दूआ (बकुल वृक्ष), अपने फुल्लें दे खिड़ने गित्तै, ओदे मुहां दी मदिरा दी फुहार चांहदा ऐ।

तन्मध्ये च स्फटिकफलका काञ्चनी वासयष्टि-
र्मूले बद्धा मणिभिरनतिप्रौढ़वंश प्रकाशैः ।
तालैः शिंजावलयसुभगैर्नर्तितः कान्तयां मे
यामध्यास्ते दिवसविगमे नीलकण्ठः सुहृद्वः ।।१९।।

१९. उनें दौने बूटें दे बश्कार बलौरै दे फट्टें आली—जेदा हेठला पासा हरे बञ्जें दीं रंगत आले सब्जें दा बनेदा ऐ—इक सुन्ने दी बैहनी ऐ। उत्थें, मेरी पत्नी दे कंगणें दियें छनकारें उप्पर बजदी ताड़ियें कन्ने नचाएदा, ओ थुआड़ा मित्तर मोर—दिन घरोंदे बेलै आई बौन्दा ऐ।

एभिः साधोः हृदयनिहितैर्लक्षणैर्लक्षयेथा
द्वारोपान्ते लिखितवपुषौ शङ्खपद्मौ च दृष्ट्वा ।
क्षामच्छायं भवनमधुना मद्वियोगेन नूनं
सूर्यापाये न खलु कमलं पुष्यति स्वामभिख्याम् ॥२०॥

२०. हे मित्तर ! इनें नशानियें गी मनै च रखिऐ, दरवाजे दे दौने वक्खीं चित्तरकारी कीते दे शंख ते कमलें गी दिखिऐ, तुस मेरे बजोगै करी दुआस ते सोभाहीन मेरे घरै गी पशानी लैगेयो। की जे, सूरजै दे अस्त होई जाने परैंत, कमलै दी ओ शोभा नईं रौंदी ।

———

गत्वा सद्यः कलभतनुतां शीघ्रसम्पातहेतोः
क्रीडाशैले प्रथमकथिते रम्यसानौ निषण्णः ।
अर्हस्यन्तर्भवनपतितां कर्तुमल्पाल्पभासं
खद्योतालीविलसितनिभां विद्युदुन्मेषदृष्टिम् ॥२१॥

२१. पैहले आखे दे क्रीड़ा पर्वतै उप्पर बैठे दे तुस तौले हेठ उतरने गित्तै हाथी दे बच्चे दा अकार बनाइयै निम्मी २ लोई आली टटैणें दी चमकै आङर अपनी बिज्जरूपी नजर घरै अन्दर सुट्टेयो ।

———

तन्वी श्यामा शिखरिदशना पक्वबिम्बाधरोष्ठी
मध्ये क्षामा चकितहरिणीप्रेक्षणा निम्ननाभिः।
श्रोणीभारादलसगमना स्तोकनम्रा स्तनाभ्यां
या तत्र स्याद्युवतिविषये सृष्टिराद्येव धातुः ॥२२॥

२२. उत्थे—(उस घरै च) पतली- पतंग, त्रिखे दंद ते पक्के दे बिम्ब फलै आङू लाल बुल्लें आली, पतले लक्क ते डरी दी हिरणी आङू अक्खीं आली, डूँगी धुन्नी ते भारे चूकले कन्ने बल्लें २ चलने आली ते छातिएँ दे भारै कन्नै किश २ झुकी दी—इस्त्रियें विच ब्रह्माजी दी पैहली रचना आङू मेरी लाड़ी ऐ।

———

तां जानीथाः परिमितकथां जीवितं मे द्वितीयं
दूरीभूते मयि सहचरे चक्रवाकीमिवैकाम्।
गाढोत्कण्ठाम् गुरुषु दिवसेष्वेषु गच्छत्सु बालां
जातां मन्ये शिशिरमथितां पद्मनीं वाऽन्यरूपाम् ॥२३॥

२३. में नुआड़ा साथी दूर पेदां, ओ चकवी आङू इकली ते बड़ा घट्ट बोलने आली, मेरी गै दूई जान समझेयो। औं अनुमान करनां जे एडे भारे दिन बीतने उप्पर, भारी बज़ोग बेदना आली उस मेरी पत्नी दा—पाले कन्ने मारी दी कमलसी आङू—किश होर गै रूप होई गेदा होना ऐ।

———

नूनं तस्याः प्रबलरुदितोच्छून नेत्रं प्रियाया
निःश्वासानामशिशिरतया भिन्नवर्णाधरोष्ठम् ।
हस्तन्यस्तं मुखमसकलव्यक्तिलम्बालकत्वा-
दिन्दोर्दैन्यं त्वदनुसरणक्लिष्टकांतेर्बिभर्ति ।।२४।।

२४. अति रोने करी सुज्जी दी अक्खीं आला ते साहें दे गरम होने करी फिक्कै पई गे दे ओठे आला, तली स्हारे रक्खेदा ते लम्मियें खिल्लरी दियें लटें करी पूरा नईं लब्बने आला, उस प्रीतमा दा मुंह— तुन्दे छाई जाने करी—चन्द्रमा आङू बक्खरा ते मता गै दीन भाव धारण करग—ऐ पक्क गै !

———

आलोके ते निपतति पुरा सा बलिव्याकुला वा
मत्सादृश्यं विरहतनु वा भावगम्यं लिखन्ती ।
पृच्छन्ती वा मधुरवचनां सारिकां पञ्जरस्थाँ
कच्चिद्भर्तुः स्मरसि रसिके त्वं हि तस्य प्रियेति ।।२५।।

५२. देवतें दी पूजा च लग्गी दी, जां बजोगै करी लिस्सी होई दी मेरी नुआरी दी तस्वीर खिचदी, जां मिट्ठा बोलने आली पिंजरे पेदी मैना गी पुछदी—"अड़िए ! तुगी बी स्वामी हुँदा चेत्ता औंदा जे नईं ? तुम्मी ते उन्दी बड़ी प्यारी एं ?"—ओ मेरी पत्नी तुन्दी नजरी पौग ।

———

उत्संगे वा मलिनवसने सौम्य निक्षिप्य वीणां
मद्गोत्रांकं विरचितपदं गेयमुद्गातुकामा ।
तन्त्रीमार्द्रां नयनसलिलैः सारयित्वा कथंचि-
द्भूयो भूयः स्वयमपि कृतां मूर्छनां विस्मरन्ती ।।२६।।

२६. जां मैले टल्लें आली, गोदै च वीणा गी रक्खिऐ मेरा नां लिखेदे गीतै गी गाने दी मरजी आली अत्थ्रुएँ कन्ने सिज्जी दी तारैं गी ते कुसे चाली ठीक करी लैंदी पर आपूँ रचे दे सुरें दे तुआरै- चढ़ा गी भुल्ली २ जन्दी (ओ तुन्दी नजरीं पौग)।

———

शेषान्मासान्विरहदिवसस्थापितस्यावधेर्वा
विन्यस्यन्ती भुवि गणनया देहलीदत्तपुष्पैः ।
संभोगं वा हृदयनिहितारम्भमास्वादयन्ती
प्रायेणैते रमणविरहेष्वंगनानां विनोदाः ।।२७।।

२७. बजोगै दे पैहले दिनें थमां लइऐ ते खत्म होने तोड़ी अवधी दे बाकी महीनें गी डुआठनी उप्पर रक्खे दे फुल्लें कन्ने गिनी २ भुञां टकांदी, जां अपने मनै च गै मेरे कन्ने कीते दे संभोगै दा स्वाद लैंदी तुसैंगी ओ लब्बग ! बजोगन मटियारें दियां अपना मन परचाने गित्तै ईऐ खेडां ते मन-परचावे हुँदे न ।

———

सव्यापारामहनि न तथा पीडयेद्विप्रयोगः
शंके रात्रौ गुरुतरशुचं निर्विनोदां सखीं ते ।
मत्संदेशः सुखयितुमलं पश्य साध्वीं निशीथे
तामुन्निद्रामवनिशयनां सौधवातायनस्थः ॥२८॥

२८. मेरा बजोग दिनें ते तेरी सखि गी इन्ना नईं सतांदा होग, की जे होर कम्में च लग्गी रौंदी ऐ। पर मिकी डर ऐ जे रातीं जिसलै उसी कोई ऑर नई रौंदी तां बजोग मता सतांदा होग। इस करी अद्धी रातीं बेल्लै अक्खो-मीटा करदी भुञां बिल्दी उस मेरी पतिव्रता लाड़ी गी मेरे समाचारें कन्ने सुख पजाने गीतै दुआरी च जाइयै दिक्खेयो।

स्निग्धाः सख्यः कथमपि दिवा तां न मोक्ष्यन्ति तन्वी-
मेकप्रख्या भवति हि जगत्यङ्गनानां प्रवृत्तिः ।
स त्वं रात्रौ जलद ! शयनासन्नवातायनस्थः
कान्तां सुप्ते सति परिजने वीतनिद्रामुपेयाः ॥२९॥

२९. दिनें ते प्यारी सहेलियां उस खीन अङ्गें आली गी नईं छोड़ङन, की जे इस संसारै च इस्त्रियें दा सुभा इक्कै नेआ गै हुंदा ऐ, इस करी हे बदल जी ! जिसलै ओदियां दास, दासिआं सई जांङन, तां ओदो खट्टै कोल दुआरी इच बैठे दे तुस जागदी मेरी लाड़ी कोल पुज्जेओ !

अन्वेष्टव्यामवनिशयने संनिकीर्णैकपार्श्वां
तत्पर्यंतं प्रगलितलवैश्छिन्नहारैरिवास्त्रैः ।
भूयो भूयः कठिनविषमां सारयन्ती कपोला-
दामोक्तव्यामयमितनखेनैकवेणीं करेण ॥३०॥

३०. मुन्ना लेटी दी बक्खी भार पेइदी, आसे पासै खिल्लरे दे मोतियें दी लड़ियें आङू अथ्रुएँ करी पशानने जोग, वद्दे दे नैंए आले हत्थें कन्ने मेरे कशा खुलने आली कठोर ते खौरी होई दी चोटी गी गल्लें परा हटांदी तुसेंगी ओ लब्बग ।

आधिक्षामां विरहशयने संनिषण्णैकपार्श्वां
प्राचीमूले तनुमिव कलामात्रशेषां हिमांशोः ।
नीता रात्रिः क्षण इव मया सार्धमिच्छारतैर्या
तामेवोष्णैर्विरहमहतीमश्रुभिर्यापयन्तीम् ॥३१॥

३१. अन्दरली पीड़ा कन्ने खीन होई दी बजोगै इच पत्तरें दी सेजा उप्पर इक्कै बखी भार लेटी दी ईयां लब्बग जियां चढ़दे आली बक्खी चन्नै दी बची दी इक्ली कला दी बनी दी मूरत होऐ ते जेड़ी रात ओ अपनी मर्ज़ी कन्ने मेरे कन्ने भोग करदे खिनें इच गज़ारी ओड़दी ही, ऊऐ रात बजोगे करी तत्ते २ अथ्रूं केरदे गजारना उसी पहाड़ वनो जन्दी होग ।

पादानिंदोरमृतशिशिराञ्जालमार्गप्रविष्टा
न्पूर्वप्रीत्या गतमभिमुखं संनिवृत्तं तथैव ।
चक्षुः खेदात्सलिलगुरुभिः पक्ष्मभिश्छादयन्तीं
साभ्रेऽह्नीव स्थलकमलिनीं न प्रबुद्धां न सुप्ताम् ॥३२॥

३२. दुआरियें दियें जालियें बिच्च औंदियें अमृत आंङू चन्ने दियें किरणें गी पैहले प्यार आङू अक्खी तुआई पासे जन्दियां न, फिरी अथ्रएँ कन्ने भारी होई दी पिम्मनियें करी मटोई दियां परतोई औंदियां न। सब्बा दी उस्सै कमलनी आङू जेड़ी बद्दलै आले रोज ना पूरी खिड़ी सकदी ऐ ते नागै बन्द होई सकदी ऐ। ईयां गै जागो-मीटे आली दशा इच ओ तुसेंगी लब्बग।

निःश्वासेनाधरकिसलयक्लेशिना विक्षपन्तीं
शुद्धस्नानात्परुषमलकं नूनमागण्डलम्बम् ।
मत्संभोगः कथमुपनमेत्स्वप्नजोऽपीति निद्रा-
माकाङ्क्षन्तीं नयनसलिलोत्पीडरुद्धावकाशम् ॥३३॥

३३. तेल आदि नईं लाने करी ते सुक्के स्नान करी गल्लें उप्पर पौने आली लिम्बें गी परती परतिऐ बक्खी करदी ते तत्ते साहें कन्ने कोमल पुँमली आङू ओठें गी तपान्दी ते सौने दी हीखी करदी जे सुखने इच गै मेरे कन्ने संजोग होई जा, पर अथ्रुएं कन्ने भ्रोची दियें अक्खीं करी नींदर औने जोगी थां गै नई रौंदा।

आद्ये बद्धा विरहदिवसे या शिखा दाम हित्वा
शापस्यान्ते विगलितशुचा तां मयोद्वेष्टनीयाम् ।
स्पर्शक्लिष्टामयमितनखेनासकृत्सारयन्तीं
गण्डाभोगात्कठिनविषमामेकवेणीं करेण ।।३४।।

३४ वजोगै दे पैहले दिन फुल्लें दा हार छोड़िऐ जेड़ी चोटी में गुन्दी ही, ते श्राप मुकने उप्पर मीं ऐ खोलनी ऐ. ऊए कठोर, रुक्खी सुक्खी इक लटै आली चोटी गी बदे दे नैऐ आले हत्थें कन्ने अपनी गल्लें परा पिच्छे करदी तुसें गी लब्बग ।

सा संन्यस्ताभरणमबला पेशलं धारयन्ती
शय्योत्संगे निहितमसकृद्दुःखदुःखेन गात्रम् ।
त्वामप्यस्रं नवजलमयं मोचयिष्यत्यवश्यं
प्रायः सर्वो भवति करूणावृत्तिरार्द्रान्तिरात्मा ।।३५।।

३५ सारे गहने बन्दे तुआरे दे लिस्सी फङ ओ बड़े दुःख सैहन्दी अपने कमजोर शरीरै गी मस्यां बिस्तरे उप्पर टकान्दी तुन्दी अक्खीं दा नमिये फुङे दे अथ्रू बराहग । तुसबी-उसी दिखियै अथ्रू केरगेओ । कोमल हिरदे आले बड़े दयालु सुभा दे हुन्दे न ।

जाने सख्यास्तव मयि मनः संभृतस्नेहमस्मा-
दित्थंभूतां प्रथमविरहे तामहं तर्कयामि ।
वाचालं मां न खलु सुभगंमन्यभावः करोति
प्रत्यक्षं ते निखिलमचिराद्भ्रातरुक्तं मया यत् ।।३६।।

३६. मी पता ऐ जे थुआड़ी सखी (मेरी पत्नी) दे हिरदे इच मेरे गित्तै बड़ा गाढ़ा प्यार ऐ । इस्सै करी अऊं अनुमान लाना, जे पैहले बजोगै उप्पर थुआड़ी नेई दशा होई दी होग—ए अऊं अपनी बड़याई आपूं नई करा करदा, जां बाधे दियां गल्लां नई मारा करदा—भाई साहब ! तुस ए सारियां गल्लां, आपूं गै प्रतक्ख दिक्खी लैगेओ ।

रुद्धापाङ्गप्रसरमलकैरञ्जनस्नेहशून्यं
प्रत्यादेशादपि च मधुनो विस्मृतभ्रूविलासम् ।
त्वय्यासन्ने नयनमुपरिस्पन्दि शङ्के मृगाक्ष्या
मीनक्षोभाच्चलकुवलयश्रीतुलामेष्यतीति ।।३७।।

३७ उस मृगनैनी दी खब्बी अक्ख—जेदियां चितवनां बालें अग्गे आइयै रोकी दियां न—कज्जलै दी चकनाई थुआं रैहत ते शराब बी छोड़ने करी जिसी अक्खीं दी सैनियें दियां खेड़ां बी भुल्ली गई दियां न, तुस जिस लै थुआड़े कोल पुजगेओ तां फड़कग, ते मच्छी दे ताईं-तुआईं फिरने करी नीला कमल जियां हिल्लन लगदा ऐ—ईआं गै मेरा बचार ऐ, ओ बी चंचल होई पौग ।

वामश्चास्याः करुरुहपदैर्मुच्यमानो मदीयै-
र्मुक्ताजालं चिरपरिचितं त्याजितो दैवगत्या ।
संभोगान्ते मम समुचितो हस्तसंवाहनानां
यास्यत्यूरुः सरसकदलीस्तम्भगौरश्चलत्वम् ।।३८।।

३८. मेरे नैएं दे नशाने थुआं रैहत ते मोतियें दी लड़ी आले कमर-बन्दै थमां रैहत, सज्जरे केले दे थम्मैं आङू गोरी उस प्रीतमा दी खब्बी जङ, जिसी अऊं भोगै परैन्त अपने हत्थें कन्ने चिकदा हुन्दा हा, फड़कन लगग ।

तस्मिन् काले जलद यदि सा लब्धनिद्रासुखा स्या-
दन्वास्यैनां स्तनितविमुखो याममात्रं सहस्व ।
मा भूदस्याः प्रणयिनि मयि स्वप्नलब्धे कथंचि-
त्सद्यः कण्ठच्युतभुजलताग्रन्थिगाढोपगूढम् ।।३९।।

३९ हे बदल जी, उस बेलै जेकर मेरी प्रीतमा मिट्ठी नींदरा सुत्ती दी होऐ, तां तुआड़े पिच्छे इक पहर बल्गी जायो । गर्जेओ नेईं—ए नई होऐ जे अऊं उसी सुखने च लब्बा दा होआं ते उस मिकी घोटिऐ जफ्फी पाई दी होऐ ते तुन्दे गर्जने करी, ओ प्रेमै आली जफ्फी दी गण्ड खुल्ली जा !

तामुत्थाप्य स्वजलकणिकाशीतलेनानिलेन
प्रत्याश्वस्तां सममभिनवैर्जालकैर्मालतीनाम् ।
विद्युद्गर्भः स्तिमितनयनां त्वत्सनाथे गवाक्षे
वक्तुं धीरः स्तनितवचनैर्मानिनीं प्रक्रमेथाः ॥४०॥

४०. उसी अपनियें फुहें दी ठण्डी बाऊ कन्ने जगागेओ, तां चमेली दियें कलियें आङू ताजा होई दी ते दुआरी इच बैठे दे तुसें गी इक टक दिखदी, उस मानै आली कन्ने तुस अपनी बिजली गी अपने अन्दर गै छपैलिऐ ते गर्जनरूपी वचनें कन्ने गल्ल शुरू करेओ !

भर्तुर्मित्रं प्रियमविधवे विद्धि मामम्बुवाहं
तत्संदेशैर्हृदयनिहितैरागतं त्वत्समीपम् ।
यो वृन्दानि त्वरयति पथि श्राम्यतां प्रोषितानां
मन्द्रस्निग्धैर्ध्वनिभिरबलावेणिमोक्षोत्सुकानि ॥४१॥

४१ हे सुहागने ! अऊं थुआड़े पति दा प्यारा मित्तर आं । ओदा स्नेहा अपने मनै च रखियै थुआड़े कश आयां । अऊं अपनी गम्भीर गर्जन कन्ने रस्ते 'च रुके दे पतिएं गी, तौले घर पुज्जने गित्तै प्रेरणा करनां, तां जे ओ घर पुज्जिऐ अपनी बजोगन लाड़ियें दियां चोटियां खोलने दी ताङ पूरी करन ।

इत्याख्याते पवनतनयं मैथिलीवोन्मुखी सा
त्वामुत्कण्ठोच्छ्वसितहृदया वीक्ष्य संभाव्य चैव ।
श्रोष्यत्यस्मात्परमवहिता सौम्य सीमन्तिनीनां
कान्तोदन्तः सुहृदुपनतः संगमात्किंचिदूनः ॥४२॥

४२. तुन्दे इयां आखने उप्पर, रामचन्द्रें दा स्नेआ आनने आले हनुमान जी गी सीता जी नै जियां दिक्खेया हा, ऊआं गै बड़ी हीखी कन्ने खिड़े दे मनै आली, बड़े मानै कन्ने थुआड़े आसै उबड़ा दिक्खग ते सारियें गल्लें गी बड़े गौर कन्ने सुनग । इस्त्रियें गित्तै मित्तरें द्वारा आन्दा दा उन्दे पतियें दा स्नेहा, साख्यात मलाटी कोला किश गै घट हुन्दा ऐ ।

तामायुष्मन् मम च वचनादात्मनश्चोपकर्तुं
ब्रूया एवं तव सहचरो रामगिर्याश्रमस्थः ।
अव्यापन्नः कुशलमबले पृच्छति त्वां वियुक्तः
पूर्वाभाष्यं सुलभविपदां प्राणिनामेतदेव ॥४३॥

४३ तुन्दी बडी उमर होऐ ! अपने उपकार आस्तै ते मेरे पासेया उसी ईयां गलायो—हे बजोगने ! थुआड़ा बजोगी साथी रामगिरी पर्वतै दे आश्रमे च रौंदा ते जिया करदा ऐ, थुआड़ा सुखसांद पुछदा ऐ। मसीबतें दे सहज शकार होए दे लोकें गी सारें कशा पैहलें ईऐ पुछना ठीक ऐ ।

अंगेनांगं प्रतनु तनुना गाढतप्तेन तप्तं
सास्त्रेणाश्रुद्रुतमविरतोत्कण्ठमुत्कण्ठितेन
ऊष्णोच्छ्वासं समधिकतरोच्छ्वासिना दूरवर्ती
संकल्पैस्तैर्विशति विधिना वैरिणा रुद्धमार्गः ॥४४॥

४४, बैरी विधाता नै गै ओदा रस्ता रोके दा ऐ ते ओ दूर पेदा ऐ। शड़े अपने विचारै कन्ने मनै 'च गै थुआड़े अथ्रुएं गी अपने अथ्रुएं कन्ने, थुआड़ी हीखी गी अपनी तीव्र हीखी कन्ने ते थुआड़े हौकें गी अपने हौकें कन्ने मेलना चाहन्दा ऐ।

———

शब्दाख्येयं यदपि किल ते यः सखीनां पुरस्ता-
त्कर्णे लोलः कथयितुमभूदाननस्पर्शलोभात्।
सोऽतिक्रान्तः श्रवणविषयं लोचनाभ्यामदृष्ट-
स्त्वामुत्कण्ठाविरचितपदं मन्मुखेनेदमाह ॥४५॥

४५, सखियें सामनै आखी जाने आली गल्ल बी जेड़ा थुआड़ी गल्लें दी स्पर्शै दी लालचै मूजब थुआड़े कन्नै 'च गै आखदा हा। हुन कन्ने 'च गल्ल सुनानें दी समर्था थमां दूर पेदा ते अक्खीं थमां ओलै होएदा थुआड़ा प्रीतम शब्दें गी जोड़ी जाड़िऐ ए स्नेहा मेरे द्वारा तुगी भेजदा ऐ!

श्यामास्वङ्गं चकितहरिणीप्रेक्षणे दृष्टिपातं
वक्त्रच्छायां शशिनि शिखिनां बर्हभारेषु केशान् ।
उत्पश्यामि प्रतनुषु नदीवीचिषु भ्रूविलासान्
हन्तैकस्मिन्क्वचिदपि न ते चण्डि सादृश्यमस्ति ।।४६।।

४६ प्रियगू दी वेलें 'च थुआड़े शरीर गी, डरी दी हरणीं दी अक्खीं 'च थुआड़ी चितवन गी, चन्द्रमा 'च थुआड़े मुहैं दी सोभा गी, मोरैं दे फङें 'च थुआड़े बालें गी, ते नदी दियें लौकी लौकियें लैहरें 'च थुआड़ी भरमें दे त्रेडेपनें गी दिखने दी कल्पना करनां, पर हे तेज सुभा आलिये ! भागें दी गल्ल दिखो—जे थुआड़ी सारी समानता इक थार कुतै बी नई थोन्दी !

त्वामालिख्य प्रणयकुपितां धातुरागैः शिलाया-
मात्मानं ते चरणपतितं यावदिच्छामि कर्तुम् ।
अस्रैस्तावन्मुहुरुपचितैर्दृष्टिरालुप्यते मे
क्रूरस्तस्मिन्नपि न सहते संगमं नौ कृतान्तः ।।४७।।

४७ प्यार इच रोहैं होई दी तुन्दी तस्वीर गेरु दे रंगे कन्ने जिसलै सिलै ऊपर बनाइयै ते थुआड़े पैरें 'च पेदे अपनी तस्वीर बनान लगनां तां अक्खीं च इन्ने अथ्रू आई जन्दे न जे अक्खीं रुकी जन्दियां न। दिक्खो विधाता किन्ना कठोर ऐ जे तस्वीरें 'च बी साढ़ा संजोग नई होन दिन्दा !

— ✽ —

धारासिक्तस्थलसुरभिणस्त्वन्मुखस्यास्य बाले
दूरीभूतं प्रतनुमपि मां पञ्चबाणः क्षिणोति।
धर्मान्तेऽस्मिन्विगणयसि कथं वासराणि व्रजेयु-
र्दिक्संसक्तप्रविततघनव्यस्तसूर्यातपानि ॥४८॥

४८. पानो दियें बाछड़ें कन्ने सिज्जी दो जिमीं दियें सगन्धियें आले थुआड़े मुँहां कशा अऊँ दूर आं ते अग्गे गै लिस्सा आं। कामदेवता मिकी होर खीण करा करदे न। तूँ आपूं सोची लै, जे गर्मी दे शेकड़ दिन, जिसलै चबक्खी काले डिग्गल सूरजै दी धुप्प रोकी लैंदे न, कियां बीतदे होङन।

———

मामाकाशप्रणिहितभुजं निर्दयाश्लेषहेतो-
र्लब्धायास्ते कथमपि मया स्वप्नसंदर्शनेषु।
पश्यन्तीनां न खलु बहुशो न स्थलीदेवतानां
मुक्तास्थूलास्तरुकिसलयेष्वश्रुलेशाः पतन्ति ॥४९॥

४६. सुखने च जदूँ कदें तूँ लब्बनी एं, तां तुगी घोटिऐ जप्फी पाने गित्तै अऊँ अपनियां बाहीं उबड़ियां करनां, तां मिकी दिखिऐ बन-देवियां बूटें दियें पुँमलियें थमां बड्डे २ फोलके बूँदें दे रूपें च केरदियां न।

———

भित्वा सद्यः किसलयपुटान् -देवदारु-द्रुमाणां
ये तत्क्षीरस्रुतिसुरभयो दक्षिणेन प्रवृत्ताः ।
आलिङ्ग्यन्ते गुणवति मया ये तुषाराद्रिवाताः
पूर्वं स्पृष्टं यदि किल भवेदङ्गमेभिस्तवेति ॥५०॥

५०. दिआरै दे बूटें दी पुम्मलियें दी तैए' गी खोलियै ते उत्थुआं बगदे रसै दी सगन्धी कन्ने रसी दी दक्खनै गी चलने आली हिमालै पर्वतै दी वाऊ गी अऊं इस करी जफ्फी पाई लैना । की जे, ए पैहलें थुआड़े शरीर कन्ने स्पर्श करियै आई दी होग ।

———

संक्षिप्येत क्षणमिव कथं दीर्घयामा त्रियामा
सर्वावस्थास्वहरपि कथं मन्दमन्दातपं स्यात् ।
इत्थं चेतश्चटुलनयने दुर्लभप्रार्थनं मे
गाढोष्माभिः कृतमशरणं त्वद्वियोगव्यथाभिः ॥५१॥

५१. त्रौं त्रौं पैहरें आली लम्मी रात—पैहलें आङू कियां लौकी बनी जा ? ते दिन बी सारी हालतें च कियां थोड़ा ताप देने आला बनै ? हे चैंचल नैनें आलिये ! थुआड़े बजोगै दी बेदना नै—मुश्कलें पूरी होने आली हीखी आले—मेरे मनै गी बेसहारा बनाई ओड़े दा ए ।

———

नन्वात्मानं बहु विगणयन्नात्मनैवावलम्बे
तत्कल्याणि त्वमपि नितरां मा गमः कातरत्वम् ।
कस्यात्यन्तं सुखमुपनतं दुःखमेकांततो वा
नीचैर्गच्छत्युपरि च दशा चक्रनेमिक्रमेण ।।५२।।

५२. सच्चें गै मतियें गल्लें दी कल्पना करी २ अऊं अपने आपै गी दलासा दिंदा रौनां। इसकरी, हे कल्याण भावना आली ! तुम्मी मती व्याकल नईं होयां। आखर कुण सदा सुखी, जां सदा गै दुखी रेआ ऐ ? चक्कै दे घेरे आङ दशा बी उप्पर- हेठ जँदी गै रौंदी ऐ—बदलदी गै रौंदो ऐ ।

————

शापान्तो मे भुजगशयनादुत्थिते शार्ङ्गपाणौ
शेषान्मासान्गमय चतुरो लोचने मीलयित्वा ।
पश्चादावाँ विरहगुणितं तं तमात्माभिलाषं
निर्वेक्ष्यावः परिणतशरच्चन्द्रिकासु क्षपासु ।।५३।।

५३. जिसलै विष्णु भगवान शेष नागै दी सेजा परा उठङन उसलै श्राप मुक्को जाना ऐ। इस करी बाकी चौं महीनें दा अखीं मीटिऐ कौड़ा घुट्ट करी लै । पिच्छुआं स्यालै दी खिड़ी दी चाननी रातें च बजोगै आली—उसले भड़की दी—हीखियें गी अस रज्जियै पूरा करी लैगे ।

————

भूयश्चाह त्वमपि शयने कण्ठलग्ना पुरा मे
निद्रां गत्वा किमपि रुदती सस्वरं विप्रबुद्धः।
सान्तर्हासं कथितमसकृत्पृच्छतश्च त्वया मे
दृष्टः स्वप्ने कितव रमयन्कामपि त्वं मयेति ॥५४॥

५४. उस नै होर बी आखे दा ऐ—इक बारी माढ़े गलें लगिए सुत्ती दी तूं हावड़िये इकदम रोन्दी जागी पई ही; ते जिसलै में मती बारीं पुच्छेया, तां तूं मनै च हस्सियै गलाया हा—"में तुसेंगी कुसै होर इस्त्री कन्ने मौज मारदे दिक्खेया ऐ!"—

———

एतस्मान्मां कुशलिनमभिज्ञानदानाद्विदित्वा
मा कौलीनादसित नयने मय्यविश्वासिनी भूः।
स्नेहानाहुः किमपि विरहे ध्वंसिनस्ते त्वभोगा-
दिष्टे वस्तून्युपचितरसाः प्रेमराशी भवन्ति ॥५५॥

५५. ओ काली अक्खीं आलिए! ए गुज्जी गल्ल पशानियै तूं समझी लेयां जे अऊं राजी-बाजी आं। लोकें दियां चर्चा सुनिऐ माढ़े उप्पर बसाह नेईं छोड़ी ओड़ेयां। सच ते ए ऐ जे—"भोग नईं होने उप्पर इष्ट वस्तुएं दी हीखियें दे बिषें च रस किट्ठे होइऐ, प्रेम दा खजाना बनी जन्दे न;"

———

आश्वास्यैवं प्रथमविरहोदग्रशोकां सखीं ते
शैलादाशु त्रिनयनवृषोत्खातकूटान्निवृत्तः ।
साभिज्ञानप्रहितकुशलैस्तद्वचोभिर्ममापि
प्रातः कुन्दप्रसवशिथिलं जीवितं धारयेथाः ।।५६।।

५६. पैहले २ बजोगै कारण, अति दुखी होई दी—अपनी सखी (मेरी पत्नी) गी—ईयां सहारा दइये ते शिवें दे बैल (नन्दी) होरें पुट्टे दे किंगरें आले कलाश पर्वतै थमां तुस तौले परतोई आवेयो। ओदी नशानी आला सुखसांद आनिये मिकी देयो ते बड्डै'लै झड़ी पौने आली चमेली आङ्ङ खीन पेइदी मेरी जिंदू गी सहारा दैयो।

कच्चित्सौम्य व्यवसितमिदं बन्धुकृत्यं त्वया मे
प्रत्यादेशान्न खलु भवतो धीरतां कल्पयामि ।
निश्शब्दोऽपि प्रदिशसि जलं याचितश्चातकेभ्यः
प्रत्युक्तं हि प्रणयिषु सतामीप्सितार्थ क्रियैव ।।५७।।

५७. हे मित्तर ! तुसें अपने मित्तरै दा कम्म तोड़ चाढ़ना मन्नी लेया ऐ—अऊं नईं सोची सकदा, जे उसी सुट्टी पाने करी, तुस चुप्प गै पानी देई दिंदे ओ ? बेनती करने आले चातकै (पपीए) गी तुस बिना किश गलाये दे गै पानी देई दिंदे ओ—भले लोक मंगने आले दी मँगा पूरी करिऐ गै गल्लै दा जबाब दिन्दे न, शड़ा आखियै नईं।

एतत् कृत्वा प्रियमनुचितप्रार्थनावर्तिनो मे
सौहार्दाद्वा विधुर इति वा मय्यनुक्रोशबुद्धया।
इष्टान्देशाञ्जलद विचर प्रावृषा सम्भृतश्री
र्मा भूदेवं क्षणमपि च ते विद्युता विप्रयोगः ।।५८।।

५८. अऊं तुसेंगी बेनती करने जोग ते नईं हा, पर मेरे कम्मै गी तोड़ जरूर चाढ़ेयो। भायें मित्तरता करी ते भायें बजोगी उप्पर तरस करी, की जे अऊँ बजोगी आं। फिरी बरसांती दी शोभा कन्ने जित्थें मरजी फिरयो, मेरी ईऐ कामना ऐ—जे मेरे आङू तुसां अपनी प्रीतमा बिजली कशा इक खिनै आस्ते बी कदें बक्खरे नई होवो।

————

इत्याख्याते सुरपतिसखः शैलकुल्यापुरीषु
स्थित्वा स्थित्वा धनपतिपुरीं वासरैः कैश्चिदाशुः।
मत्वागारं कनकरुचिरं लक्षणैः पूर्वमुक्तै-
स्तस्योत्सङ्गं क्षितितलगतां तां च दीनां ददर्श ।।५९।।

५९. ईयां आखे जाने उप्पर ओ बद्दल पहाड़ें, नदियें ते नगरें 'च बसोंदा अलकापुरी पुज्जी गेया। पैहले दस्से दे नशान ते सनहरी महलें गी पशानी गेआ। उत्थें, उस भुंञा लेटी दी ओ (यक्षै दी प्रीतमा) दिक्खी।

————

तस्मादद्रेर्निगदितुमथो (पथा) शीघ्रमेत्यालकायां
यक्षागारं विगलितनिभं दृष्टचिह्नैर्विदित्वा।
यत्संदिष्टं प्रणयमधुरं गुह्यकेन प्रयत्ना-
त्तद्गेहिन्या सकलमवदत्कामरूपी पयोदः ॥६०॥

६०, इच्छा रूप धारी बद्लै उस पहाड़ैं थमां उतारिऐ लब्बने आले नशानें थमां शोभा रैंहत यक्षै दा मकान पछानियै, ओदी लाड़ी गी ओ प्रेमभरी सारी गल्ल सनाई ओड़ी। जेड़ी यक्ष ने बड़े जतन कन्ने स्नेहे च आखी दी ही।

तं संदेशं जलधरवरो दिव्यवाचाऽऽचचक्षे
प्राणांस्तस्या जनहितरतो रक्षितुं यक्षवध्वाः।
प्राप्योदन्तं प्रमुदितमनाः साऽपि तस्थौ स्वभर्तुः
केषां न स्यादभिमतफला प्रार्थनाह्युत्तमेषु ॥६१॥

६१. लोकें दी भलाई च लग्गे दे बद्लै यक्ष दी प्रीतमा दे प्राणें गी बचाने गित्तै ओ स्नेआ उसी दई ओड़ेया। ओ बी अपने पति दा समाचार सुनियै बड़ी खुश होई। भलें लोकें गी बेनती कीती जा तां ओ मनमरजो दा फल की नईं देन?

श्रुत्वा वार्तां जलदकथितां तां धनेषोऽपि सद्यः
शापस्यान्तं सदयहृदयः संविधायास्तकोपः ।
संयोज्येनौ विगलितशुचौ दम्पती हृष्टचित्तौ
भोगानिष्टानविरतसुखं भोजयामास शश्वत् ॥६२॥

६२. बद्लै थमां ओ स्नेआ सुनिऐ, मनै च दया करिये ते रोह ढालियै राजे कुबेर नै अपना श्राप परती लेया—ते इनें दौनें (यक्ष पति -पत्नी) गी मलाइऐ खूब नन्द कराया। नेआ नन्द जेड़ा सदा ते स्थायी रवै ।

इत्थंभूतं सुरचितपदं मेघदूताभिधानं
कामक्रीड़ाविरहितजने विप्रयोगे विनोदः ।
मेघस्यास्मिन्नतिनिपुणताबुद्धिभावः कवीनां
नत्वाऽऽर्यश्चिरणकमलं कालिदासश्चकार ॥६३॥

६३, कवी कालिदास होरें कालका भगवती दे चरणकमलें गी बन्दियै, सुदन्र छन्दें आला "मेघ- दूत" नां दा नेआ काव्य बनाया। जेदे च प्रेमै दी खेडें थमां खाली रौंदे लोकें गित्तै बजोगै च मनै गी खुशी देने आला सम्यान बी ऐ। बदलै दी चतराई बी ऐ ते कवियें दी बुद्धि दा भाव -चमत्कार बी ऐ।

(इति श्रीः)

हमा... ...शन :—

१.	त्रिवेणी (डोगरी-भाषा संस्कृति ते साहित्य) ले० शक्ति शर्मा, श्याम लाल शर्मा	डोगरी	३) रुपये
२.	भागवत दियां कत्थां ले० श्यामलाल शर्मा	"	१) ५० पैसे
३	प्रेमनाथ डोगरा (एक व्यक्तित्व) ले० श्यामलाल शर्मा	हिन्दी	७५ पैसे
४.	वताल पचीसी ले० श्यामलाल शर्मा	डोगरी	५) रुपये
५.	मेघ दूत ले० श्यामलाल शर्मा	"	२) रुपये

आगामी प्रकाशन :—

६.	गवाची दी छूठी (अभिज्ञान शाकुन्तलम्) ले० श्यामलाल शर्मा	"	
७.	गिल्लुएं दियां कत्थां ले० शक्ति शर्मा	"	
८.	डोगरी निबन्ध	"	
९.	डोगरी लोक कत्थां	"	
१०.	डोगरी शब्दकोश	डोगरी, हिन्दी, उर्दू	

श्रीपति प्रकाशन
१६५, विजयगढ़, जम्मू